सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

• वर्ष : 14 • • अंक : 5-6 • • 5 सितम्बर 2017 • • मूल्य : 20रु. •

बीकानेर मासक्षमण

सुरत मासक्षमण

गाजियाबाद मासक्षमण

॥ श्री महावीरस्वामी नमः ॥

॥ दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त मणिधारी कुशलचन्द्रसुरी गुरुभ्यो नमः ॥

प्रथम दादागुरुदेव की कर्म भूमि एवं द्वितीय दादा गुरुदेव की जन्म भूमि

श्री विक्रमपुर (बिकमपुर) राजस्थान नगरे नवनिर्मित

२४वें तीर्थंकर श्री महावीरस्वामीजी का जिनालय एवं दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी दादावाड़ी

के भव्य अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

भाव भरा सस्नेह अग्रिम निमंत्रण

-: आज्ञाप्रदाता व निश्रा प्रदाता :-

खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

✲ महोत्सव प्रारम्भ ✲	✲ भव्य वरघोड़ा व अंजनशलाका ✲	✲ पावन प्रतिष्ठा ✲
मिगसर वद 10 सोमवार	मिगसर वद 11 मंगलवार	मिगसर वद 12 बुधवार
दि. 13.11.2017	दि. 14.11.2017	दि. 15.11.2017

सम्पूर्ण निर्माण एवं प्रतिष्ठा सहयोगी
रूपये 200001/-
आपके परिवार के 5 नाम शिलालेख एवं पत्रिका में अंकित होंगे।

✲ निवेदक ✲

श्री जिनदत्तकुशलसुरी खरतरगच्छ पेढी

पालीताणा - अहमदाबाद - चेन्नई

निर्माण एवं प्रतिष्ठा सह सहयोगी
रूपये 100001/-
आपके परिवार के 2 नाम शिलालेख एवं पत्रिका में अंकित होंगे।

मोहनचंद ढढ्ढा	तेजराज गुलेछा	भंवरलाल छाजेड़	पदमकुमार टाटिया	दीपचन्द बाफणा
संरक्षक एवं संयोजक	अध्यक्ष	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	महा मंत्री	कोषाध्यक्ष
98410 94728	94483 87442	99670 22183	98408 42148	98250 06235

✲ निकटतम एयरपोर्ट ✲
जोधपुर 210 कि. मी.
(फलोदी एवं बाप होते हुए)

आपके आगमन की सूचना दि. 15 अक्टूबर 2017 तक अवश्य दिरावें।
ताकि उचित व्यवस्था की जा सके।

✲ निकटतम रेल्वे स्टेशन ✲
फलोदी 75 कि. मी.,
बीकानेर 150 कि. मी., नागौर 235 कि. मी.

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

जरा जाव न पीलेई वाही जाव न वड्ढई।
जाविंदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे॥

– दशवैकालिक 6/17

जब तक बुढ़ापा नहीं सताता, जब तक रोग नहीं बढ़ता, और जब तक इन्द्रियाँ क्षीण नहीं होतीं तब तक धर्म का अच्छी तरह से आचरण कर लेना चाहिए।

A Person should properly practise religion before old age afflicts, before diseases become chronic and before the senses become powerless.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	04
2. गुरुदेव की कहानियां	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	05
3. महाशतक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.	06
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	08
5. दीपावली पूजन विधि	संकलन	10
6. बरडिया गोत्र का इतिहास	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	15
7. दो शिकारी	मुनि समयप्रभसागरजी म.सा.	16
8. समाचार दर्शन	संकलन	18
9. जटाशंकर	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	38

आगामी कार्यक्रम

अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं अ.भा. खरतरगच्छ महिला परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन
28 व 29 अक्टूबर 2017

सूरि मंत्र साधना

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा. सूरिमंत्र की दूसरी पीठिका की साधना का प्रारंभ 23 सितम्बर 2017 आसोज सुदि 3 शनिवार से करेंगे।

पूज्य श्री संपूर्ण एकान्त में मौन के साथ यह साधना करेंगे। इस साधना की पूर्णाहूति ता. 8. अक्टुबर 2017 कार्तिक वदि 3 रविवार को होगी। इसी दिन महामांगलिक होगी।

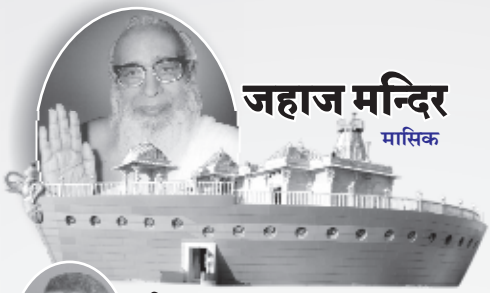

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 13 अंक : 05-06 5 सितम्बर 2017 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

नवप्रभात

मन बहुत अबूझ है। सबको समझना आसान है, पर मन को समझना बहुत मुश्किल है। और उसे साधना तो और मुश्किल है।

यह मन ही है, जो 24 घंटे काम करता है। आप चाहे सोते हो, चाहे जागते! आप कोई काम कर रहे हों, चाहे यों ही बैठे हो! वह हर समय काम करता है।

मन को समझे बिना उसे साधा नहीं जा सकता। मन के विभिन्न प्रतिपल बदलते रूपों को समझ कर ही उसे वश में किया जा सकता है।

एक मन है हमारे पास जागृत मन! व्यक्ति जब जागता है, तब काम करता है। जागृत मन शक्तियों का भंडार है। वह विचार शक्ति, इच्छाशक्ति, तर्क शक्ति के साथ काम करता है।

जबकि दूसरा है अर्ध जागृत मन, जिसके पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है। जागृत मन की विशेषता उसकी शक्तियाँ है। जबकि अर्धजागृत मन की विशेषता उसका समर्पण भाव है। वह बिना किसी तर्क के जागृत मन के आदेशों का पूर्ण पालन करता है।

यह समझने जैसा है कि कार्य करने की शक्ति जागृत मन के पास मात्र 10 प्रतिशत और अर्धजागृत मन के पास 90 प्रतिशत है। पर 10 प्रतिशत शक्ति वाला जागृत मन 90 प्रतिशत शक्ति वाले अर्धजागृत मन पर हावी हो जाता है। जागृत मन मालिक की भांति आदेश देता है। और अर्धजागृत मन सेवक की भांति उसके आदेशों का पालन करता है।

हमें बस एक काम करना है। जागृत मन और अर्धजागृत मन के बीच एक छलनी को प्रतिष्ठित करना है। उस छलनी का नाम है– विवेक! मर्यादा! समझ! दूरदृष्टि!

वह छलनी जागृत मन के अनुचित विचारों को अर्धजागृत मन के पास जाने नहीं देगी। वहीं रोक कर उसे डिलीट कर देगी।

हमें छलनी की प्रतिष्ठा करनी है। विवेक का जागरण विचारों के भटकाव को रोकेगा। मन की स्वस्थता में ही तो मन के वशीकरण का मंत्र छिपा है।

गुरुदेव की कहानियाँ

शस्त्र और शास्त्र

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द के प्रवचनों की धूम मची थी। भारतीय संस्कृति में पले, ढले स्वामी जी के प्रवचनों में भारत की आत्मा बोलती थी।

कुछ अमेरिकन युवक इस कारण बड़ी अकुलाहट से भर उठे थे। उनका सोचना था स्वामीजी यहाँ केवल भारत की प्रशंसा करते हैं, जबकि एक बार भी अमेरिका की कीर्ति में कुछ नहीं कहा।

उन्होंने निर्णय किया कि स्वामीजी को कुछ ऐसी नई चीज दिखावें ताकि उन्हें अमेरिका की प्रशंसा करनी ही पड़े।

वे उन्हें एक यांत्रिक कत्लखाना दिखाने ले गये। वह कत्लखाना बड़ा आधुनिक बना था। स्वामीजी के सामने उसकी विशेषताओं का वर्णन किया। एक बड़ी भैंस लाई गई। मशीन में डाला गया। एक ही झटके में उसके टुकड़े टुकड़े हो गये। सारे अवयव अलग-अलग हो गये, 14 पैकेट भी अपने आप तैयार हो गये। कुछ ही मिनटों में ये सारी विधि हो गई।

उन युवकों ने विजय भरी वेधक नजरों से स्वामीजी की ओर देखा। उनका चिन्तन था कि ऐसी अद्‌भुत मशीन की तो प्रशंसा इन्हें करनी ही पड़ेगी।

उन्होंने स्वामीजी से अपनी टिप्पणी करने का निवेदन किया।

स्वामीजी बड़े उदास थे। उन्होंने गंभीर स्वर में कहा-मैंने अभी-अभी एक भैंस को 14 हिस्सों में बँटते और इनके पैकेट बनते देखा। मैं इस क्रिया की क्या प्रशंसा करूँ! किसी को मारने में क्या कला होती है।

हाँ! मैं प्रशंसा तो तब करूँ जब इन 14 पैकेटों से एक भैंस का निर्माण आप कर दें।

उन युवकों की नजर नीची हो गई। वे कुछ भी नहीं बोल सके। एक भैंस के तो चौदह टुकड़े किये जा सकते थे, पर 14 टुकड़ो से भैंस का निर्माण सर्वथा असंभव था।

स्वामीजी ने आगे कहा-तुम्हारे पास बड़े-बड़े प्राणी को मारने के शस्त्र हैं, जबकि हमारे पास चींटी को भी बचाने के शास्त्र हैं। तुम शस्त्रों से मार सकते हो, हम शास्त्रों से बचा सकते हैं।

लाख गंगा उतरने पर भी सागर खारा ही रहेगा
तनिक ताप से फैले जो यहां वह पारा ही रहेगा
जहाँ पहुँचने पर डूबने का खतरा नहीं होता
उसको तो जामाना सदा किनारा ही कहेगा

दस महाश्रावकों की प्रेरक-जीवन-गाथा

महाशतक श्रावक

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे)

अवधिज्ञान में रेवती का अतिकरूण अनागत काल जाना तो कर्म-विपाक का भयंकर स्वरूप देखकर अधिकाधिक आत्मभावों से ओतप्रोत होने लगे। इधर रेवती जब कभी पर्व प्रसंग पर मांस नहीं मिलता तब वह गोकुल से बछड़े को गुप्त रूप से मंगवाकर उनकी हत्या करवाती और अपनी मांस लोलुपता को तृप्त करती।

एक रात तो जैसे तूफान ले आयी। आकण्ठ मांस-भक्षण करके उसने मदिरा सेवन किया था। इससे इन्द्रियाँ तनिक भी वश में नहीं रही और कामविह्वल होकर न आगे-पीछे न दिन-रात का सोचा और पौषधशाला में जाकर उन्मत्त प्रलाप करने लगी- महाशतक! आज तो तुम्हें मेरा कहा मानना ही होगा। यह धर्म का ढोंग करने वाले तो नपुंसक होते है नपुंसक! जो स्त्री को रति-सुख नहीं दे सकते, उन नामर्दों का धर्म है ये।

अनशन और प्रतिमा आराधना के दो-दो सोपानों पर चढ रहा महाशतक परम शान्त था परन्तु रेवती डाकिनी-शाकिनी की भाँति अनर्गल प्रलाप किये जा रही थी-ये मूर्खता छोड़ो और काम-भोग का सुख प्राप्त करें।

मैंने बारह सपत्नियों को मरवाया ताकि तुझे ज्यादा से ज्यादा कामसुख प्राप्त हो पर तुम तो निर्मम-निर्दयी की तरह विमुख बनकर मुझे और ज्यादा तरसा रहे हो! मुझे सुखी देखना यदि तुम्हें पसंद नहीं तो मुझसे शादी ही क्यों की?

अरे! मेरी जिन्दगी लुट गयी! मैं जीते मर क्यों नहीं गयी। कहकर वह जोर-जोर से विलाप करने लगी। परन्तु महाशतक महाकरूणा में जी रहा था-वास्तव में महामोही जीव देहिक सुखों के गंदे गट्टर में जन्म लेते है और उसी में आनंद मानकर मर जाते हैं।

पर जब रोने-चिल्लाने से भी काम नहीं बना तब वह धमकी पर उतर आयी-देख महाशतक! तुम मानो या न मानो! आज मैं अपना धारा हुआ विचार हुआ करके ही रहूंगी। कामवासना का जुनून मेरे अंग-अंग में तूफान मचा रहा है। रोम रोम में भोग का विस्फोट हो रहा है। यदि तूंने नहीं माना तो बलात्कारपूर्वक भी मैं मेरी बात मनवा के ही रहूंगी।

महाशतक समझ गया था कि रेवती आज मर्यादा एवं लोक-लाज की सारी दीवारें तोड़ने पर तुली हुई है। काम-लालसा का भूत इसके सिर पर चढा हुआ है, अतः इसे कुछ भी कहना व्यर्थ-निरर्थक है। पर यह भी कोई ढंग है। मर्यादा तो आखिर मर्यादा है। उसका उल्लघंन करते हुए इसे तनिक भी शर्म कहाँ है!

उसने सरोष थोड़ा गरज कर कहा-रेवती! तूं जो कर रही है, उसका तुझे ख्याल भी थोड़ा बहुत है कि नहीं? यह काम का पागलपन तुझे दुर्गति में ले जाकर पटकेगा। कुलकलंकीणि! तूंने स्वयं को ही नहीं, अपनी कुल परम्परा को भी नहीं मिटने वाला कलंक लगाया है।

तेरे पाप का घड़ा अब फूटने वाला है। तेरा अंधकार और दुःख से परिपूर्ण भविष्य मैं स्पष्ट जान रहा हूं। तूं आज से सातवें दिन मरकर प्रथम नरक में लोलुक नरकावास में जन्म लेगी।

महाशतक भावी जीवन की चेतावनी देकर पुनः ध्यानस्थ बन गये परन्तु रेवती भीतर तक कांप गयी। मृत्यु और वह भी सातवें दिन। नरक की अपार वेदनाएं! घोर-कठोर दुःख के बहते महासागर।

अरे! मैंने कामाधीन बनकर जीवन-बाजी को बिगाड़ दिया। मैंने अपनी 12 सपत्नियों को मारा। मद्य-मांस में दिन-रात डूबी रही।

सिसकियाँ भरती वह घर पहुँची पर पल भर भी आराम कहाँ था। होता भी कैसे? जैसे-जैसे घड़ी का कांटा आगे बढ रहा था, वैसे-वैसे मृत्यु नजदीक आती जा रही थी।

प्रतिपल मृत्यु का भय! नरक का भय! दिन में चैन नहीं, रात में नींद नहीं। उसने मान लिया था कि क्रोध में आकर स्वामी ने श्राप दिया है। अत: पौषधशाला जाना तो दूर की बात, उनके स्पर्श की इच्छा भी समाप्त हो चुकी थी।

जैसे-जैसे दिन बीत रहे थे, वैसे-वैसे आर्त्तध्यान बढ़ता जा रहा था। कहा भी जाता है, जैसी गति वैसी मति। उसकी दुर्गति दुर्ध्यान को खींचकर ला रही थी।

हाय! क्या मैं मर जाऊँगी? क्या मुझे करोड़ों की सम्पत्ति छोड़कर जाना होगा। नहीं...नहीं! मुझे नहीं मरना है, मैं जीना चाहती हूँ। महाशतक के प्रति दुर्ध्यान, सम्पत्ति का राग और नरक के प्रति द्वेष...। अन्तत: भोग के विपाकी महारोगों से काया छलनी होने लगी। हाय! हाय! करती, छाती पीटती और माथ पछाडती रेवती आखिर सातवें दिन रौद्रध्यान में मरकर नरक में महादु:खों में जा पहुँची।

महाश्रावक महाशतक की महासाधना के दिव्य-अनुष्ठान की सुवास पूरी राजगृही को सुवासित कर रही थी। उन्हीं दिनों परमात्मा महावीर शिष्य सम्पदा के साथ राजगृही पधारे तो वह सुवास सहस्रगुणित हो गयी।

प्रभुवर ने गणधर गौतम स्वामी को कहा-गौतम! श्रावक महाशतक प्रतिमा साधना के उपरान्त अनशन की आराधना कर रहा है। उसे भी आनंद की भाँति अवधिज्ञान उत्पन्न हुआ है। उसने ज्ञान-प्रकाश में प्रकाश्यमान पत्नी रेवती का भावी कहा था। यद्यपि उसका कथन सम्यग् था तथापि उसमें क्रोध की कड़वाहट भी थी अत: सामने वाले के हृदय को जख्मी करे, ऐसा अप्रिय सत्य आत्म-साधना एवं साधक को आघात पहुँचाने वाला तत्त्व है।

गौतम! आने की तीव्र उत्कंठा होने पर भी वह आ नहीं सकता क्योंकि देह बल साथ नहीं दे रहा। अत: तुम उसके घर जाओ और 'धर्मलाभ' देकर उसे संदेश-उपदेश दो कि परपीड़ाकारी शब्द, जो तुमसे बोला गया है, उसका प्रायश्चित्त लेना चाहिये ताकि अनशन की अद्वितीय आराधना दोष मुक्त तथा निर्मल बने।

तहत्तिपूर्वक गौतम स्वामी उस दिशा में रवाना हुए। इधर उनके आगमन के समाचार मिलते ही महाशतक के रोम-रोम में प्रसन्नता छा गयी। वह कृशकाय होने पर भी जैसे-तैसे बैठकर, आनंदित निगाहों से गौतम स्वामी की प्रतीक्षा करने लगा।

गणधर प्रवर पधारे तब वंदन करके भगवान की सुखशाता-पृच्छा की।

गौतम स्वामी ने कहा-श्रावकश्रेष्ठ! तुम्हे परमात्मा ने 'धर्मलाभ' कहलवाया है। तुम साधना के शिखर पर आरूढ हो। शाता तो है न तुम्हें?

प्रभु एवं आपकी कृपा है। जहाँ पूज्यजनों का सिरच्छत्र हो, वहाँ पीड़ा कैसे हो सकती है गुरुदेव!

महाशतक! प्रभु ने एक संदेश दिया है, उसे सुनाने के लिये ही आया हूँ! महाशतक की आँखों में आनंद उभर आया।

प्रभु ने कहलवाया है कि अन्य के चित्त को दु:ख पहुँचाने वाला आघातकारी शब्द सत्य होने पर भी अप्रिय होने से असत्य ही कहलाता है।

महाशतक यद्यपि असत्य नहीं बोलता है तथापि मृषा नहीं होने पर भी रेवती को जो भविष्यवाणी सुनायी थी, उसमें अप्रियता, क्रोध एवं रोष का अंश मिल जाने से वह भी असत्य हो गया था। ऐसा पराघात करने वाला शब्द भी सत्यभाषी के लिये त्याज्य है अत: तुम्हें प्रायश्चित्त लेकर आत्म-शुद्धि का उपाय करना चाहिये।

महाशतक की आँखें भर आयी।

गौतम स्वामी ने पूछा-ये आँसू कैसे?

गुरुवर! प्रभु की वात्सल्य दृष्टि को देखकर! मेरी आत्मा की चिन्ता करने वाले प्रभु का उपकार कितना महान! उन्होंने धर्म ही नहीं दिया अपितु आराधना में तनिक भी दोष न लगे, इसका भी पूरा ध्यान रखा। अप्रिय वचन के प्रति मैं पुन: पुन: मिथ्या दुष्कृत देता हूँ।

उनकी विनंती पर गौतम स्वामी ने प्रायश्चित्त दिया! वे पाप की शुद्धि करके निशल्य-निर्दोष बने।मासिक अनशनपूर्ण होने पर समाधिपूर्वक मृत्यु प्राप्त कर देवलोक में देव बने। वहाँ से महाविदेह में जन्म लेकर आत्मा की दिव्य साधना करके आत्म सुख के उपभोक्ता बनेंगे।

57 संस्मरण

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

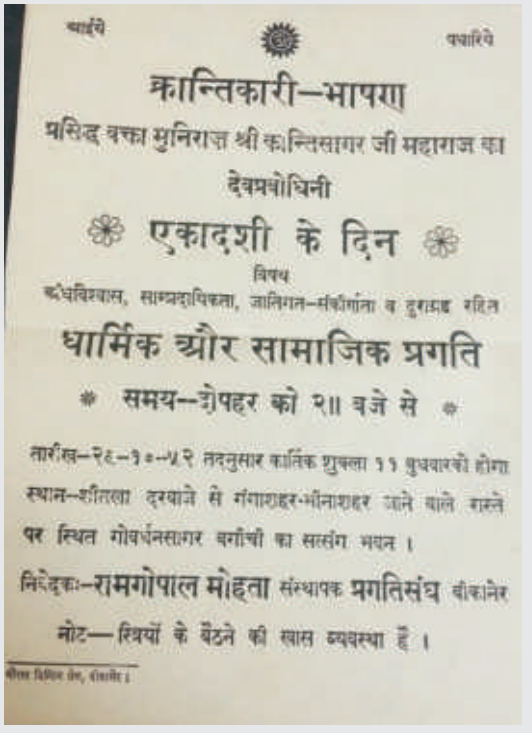

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

आईये पधारिये

क्रान्तिकारी-भाषण

प्रसिद्ध वक्ता मुनिराज श्री कान्तिसागर जी महाराज का

देवप्रबोधिनी

एकादशी के दिन

विषय

अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता, जातिगत-संकीर्णता व दुराग्रह रहित

धार्मिक और सामाजिक प्रगति

समय—दोपहर को २॥ बजे से

तारीख—२८-१०-५२ तदनुसार कार्तिक शुक्ला ११ बुधवारको होगा

स्थान—शीतला दरवाजे से गंगाशहर-भीनाशहर जाने वाले रास्ते पर स्थित गोवर्धनसागर बगीची का सत्संग भवन।

निवेदक—रामगोपाल मोहता संस्थापक प्रगतिसंघ बीकानेर

नोट—स्त्रियों के बैठने की खास व्यवस्था है।

सन् 1952 की घटनाओं का उल्लेख कर रहा हूॅ। उस वर्ष पूज्य गुरुदेवश्री पालीताना से विहार कर मेडता रोड पधारे थे। और वहॉ पूज्य आचार्य भगवंत (तत्कालीन उपाध्याय) श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी म. आदि पूज्यवरों के साथ अपने गुरुदेव पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के समाधि स्थल/अग्नि संस्कार स्थल पर उनकी चरण पादुका प्रतिष्ठित की थी।

वहॉ से विहार कर नागोर होते हुए पूज्यश्री अपने लघु गुरु बन्धु पूज्य दर्शनसागरजी म. के साथ बीकानेर पधारे। चातुर्मास सुगनजी के उपाश्रय में हुआ।

पूज्यश्री की पूर्व प्रकाशित जीवन कथा में उल्लेख है कि उस समय पूज्यश्री के प्रवचनों में भारी भीड उपस्थित होती थी। परिणाम स्वरूप पूज्यश्री के प्रवचनों का आयोजन समय समय पर चांदमलजी ढड्ढा की कोटडी आदि कई स्थानों पर हुआ था।

पूज्यश्री के प्रवचनों में न केवल जैन समाज वरन् जैनेतर समाज भी बडी संख्या में उपस्थित होता था। कई प्रवचनों का आयोजन उन्होंने ही करवाया था।

गोपाष्टमी के दिन ता. 26 अक्टूबर 1952 में पूज्यश्री का विशेष सार्वजनिक प्रवचन श्री

आईये ! श्री वीतरागाय नमः पधारिये !

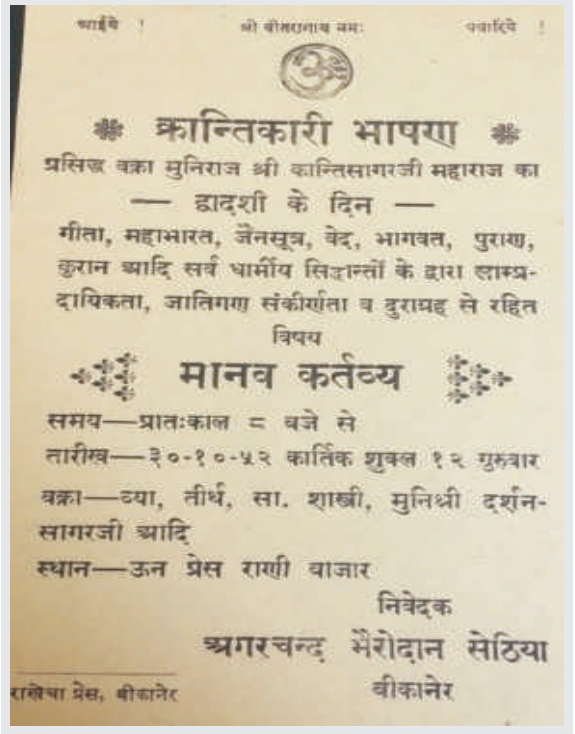

क्रान्तिकारी भाषण

प्रसिद्ध वक्ता मुनिराज श्री कान्तिसागरजी महाराज का

— द्वादशी के दिन —

गीता, महाभारत, जैनसूत्र, वेद, भागवत, पुराण, कुरान आदि सर्व धार्मीय सिद्धान्तों के द्वारा साम्प्रदायिकता, जातिगण संकीर्णता व दुराग्रह से रहित

विषय

मानव कर्तव्य

समय—प्रातःकाल ८ बजे से

तारीख—३०-१०-५२ कार्तिक शुक्ल १२ गुरुवार

वक्ता—व्या, तीर्थ, सा. शास्त्री, मुनिश्री दर्शन-सागरजी आदि

स्थान—ऊन प्रेस रागी बाजार

निवेदक

अगरचन्द भैरोदान सेठिया

बीकानेर

राजेचा प्रेस, बीकानेर

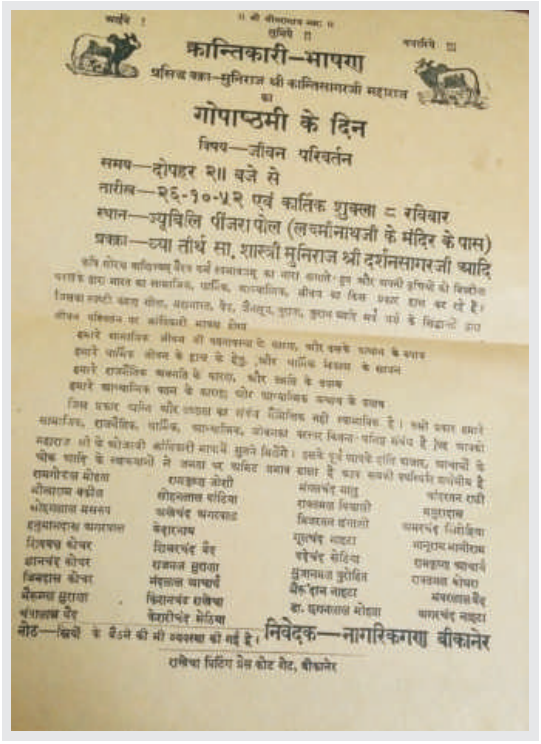

कान्तिकारी—भापरा

प्रसिद्ध वक्ता—मुनिराज श्री कान्तिसागरजी महाराज का

गोपाष्ठमी के दिन

विषय—जीवन परिवर्तन

समय—दोपहर २॥ बजे से

तारीख—२६-१०-५२ एवं कार्तिक शुक्ला ८ रविवार

स्थान—ज्यूबिलि पींजरा पोल (लक्ष्मीनाथजी के मंदिर के पास)

प्रवक्ता—व्या. तीर्थ सा. शास्त्री मुनिराज श्री दर्शनसागरजी आदि

[illegible]

निवेदक—नागरिकगण बीकानेर

लक्ष्मीनाथजी के मंदिर के पास ज्यूबिलि पिंजरा पोल में हुआ था। दिन के ढाई बजे आयोजित इस विशेष प्रवचन में हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे।

इस प्रवचन के प्रचार प्रसार के लिये जो पेम्पलेट प्रकाशित हुआ था, उसमें निवेदक के रूप में बीकानेर के सभी समाजों के संभ्रान्त आगेवानों के हस्ताक्षर हैं।

29.10.52 को देव प्रबोधिनी एकादशी के दिन धार्मिक और सामाजिक प्रगति विषय पर प्रवचन रखा गया। इस प्रवचन का आयोजन श्री रामगोपालजी मोहता, संस्थापक प्रगति संघ बीकानेर की ओर से किया गया था। यह प्रभावशाली प्रवचन गोवर्धनसागर बगीची के सत्संग भवन में हुआ था।

30 अक्टूबर 1952 को शा. अगरचंद भैरोदान सेठिया परिवार की ओर से मानव कर्त्तव्य विषय पर पूज्यश्री का प्रवचन ऊन प्रेस, राणी बाजार में आयोजित किया गया।

बीकानेर के उन प्रवचनों को आज भी वयोवृद्ध लोग याद करते हैं।

क्रमशः

बीकानेर में तुलसी विहार में जिन मंदिर का शिलान्यास

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 8 एवं पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा में बीकानेर नगर के गंगाशहर में तुलसी विहार कॉलोनी में श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर के भूमिपूजन, खात मुहूर्त्त एवं शिलान्यास का समारोह ता. 14 अगस्त 2017 को शुभ मुहूर्त्त में अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

तुलसी विहार में जिन मंदिर हेतु भूमि अर्पण कॉलोनी बनाने वाले श्री सुमेरमलजी दफ्तरी परिवार ने अर्पण की है।

खात मुहूर्त्त का लाभ श्री थानमलजी बोथरा परिवार ने लिया। जबकि मुख्य शिला का लाभ श्री मूलचंदजी महावीरचंदजी खजांची परिवार ने लिया। अन्य शिलाओं में श्री अशोककुमारजी गोलेच्छा परिवार, श्री विनोदचंदजी हीराचंदजी सेठिया परिवार, श्री बाबुलालजी घेवरचंदजी मुसरफ परिवार एवं श्री मोहनलालजी माणकचंदजी सेठिया परिवार ने लिया।

नवग्रह पूजन का लाभ श्री बसन्तकुमारजी विजयकुमारजी नवलखा ने लिया। दशदिक्पाल का लाभ श्री अशोककुमारजी गोलेच्छा व अष्टमंगल का लाभ श्री विनोदकुमारजी हीराचंदजी सेठिया परिवार ने लिया।

शिलान्यास अवसर पर भंडार भरने का लाभ श्री बसन्तकुमारजी नवलखा परिवार एवं ईश्वरचंदजी बोथरा परिवार ने लिया।

गर्भनाल बिराजमान का लाभ श्री बसन्तकुमारजी नवलखा परिवार ने लिया। विधि विधान कराने के लिये मक्षी से श्री हेमन्तभाई विधिकारक पधारे थे।

श्री जैन शारदा-महालक्ष्मी पूजन दीपावली पूजन-विधि

1. स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर पूजा करें।
2. पूजन के उपकरण-धूप बत्ती, धूपदान, अखण्ड दीपक, पान, मौली, पंचामृत-दही, दूध, घी, मिश्री और केसर मिलाकर कलश तैयार कर लें। अक्षत, सुपारी और केसर आदि सभी एक थाली में संचय करके रख लें।
3. दवात को मांजकर नई स्याही भरें।
4. नई पेन/कलम लें।
5. पूजन करते समय भगवान महावीर स्वामी, श्री गौतम स्वामी, शारदा और लक्ष्मी का चित्र बाजोट पर पूर्व या उत्तर में स्थापित करें।
6. शुभ मुहूर्त्त में नई बहियों, कलम, दवात को किसी चौकी या पाटे पर पूर्व या उत्तर की ओर स्थापित करें।
7. इस पाटे के दाहिने ओर घी का दीपक और बायीं ओर धूप या अगरबत्ती रखें।
8. पूजन करने वालों के दाहिने हाथ की ओर दवात, नई कलम रखे। बहियों को तीन नवकार गिनकर लच्छा बांधे।
9. पूजन करने वालों को तीन नवकार गिनते हुए दाहिने हाथ की कलाई में मौली बांधें। फिर एक नवकार पढ़ते हुए कलम के भी मौली बांधें।
10. दीपावली पर्व पर उपवास, आयंबिल, एकासना आदि तप करें।
11. आतिशबाजी आदि का उपयोग नहीं करें। इससे महान् कर्मबंधन होता है। अतः यह सर्वथा त्याज्य है।
12. कुमारिका द्वारा सर्वपूजकों के कपाल पर कुंकुम का तिलक कर अक्षत लगावें।

नई बही के प्रथम पाने में सर्वप्रथम **ॐ अर्हम् नमः** लिखें। फिर एक से लेकर नौ, 9 आकारों में एक **श्री** से प्रारम्भ कर 9 **श्री** तक लिखें, इससे **श्री** का शिखर बन जाएगा। उसके नीचे रोली (कुंकुम) का 卐 (स्वस्तिक) बनायें, फिर उसके आजू-बाजू में **शुभ लाभ** इस प्रकार लिखें -

।।ॐ अर्हम् नमः।।

श्री

शुभ श्री श्री लाभ

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

卐 श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री 卐

卐

फिर बही में लिखना प्रारम्भ करें :-

8	3	4
1	5	9
6	7	2

।।श्री महावीर स्वामिने नमः।।

।।श्री गुरू गौतम स्वामिने नमः।।

।।श्री जिनदत्त-चन्द्र-कुशल-चन्द्र गुरूभ्यो नमः।।

।।श्री सद्गुरूभ्यो नमः।।

।।श्री सरस्वत्यै नमः।।

श्री गुरूगौतमस्वामीजी जैसी लब्धि हो
श्री केसरियाजी जैसा भरपूर भंडार हो
श्री भरत चक्रवर्ती जैसी ऋद्धि हो
श्री बाहुबली जी जैसा बल हो
श्री अभयकुमार जी जैसी बुद्धि हो
श्री कयवन्नाजी सेठ जैसा सौभाग्य हो
श्री धन्ना शालिभद्रजी जैसी सम्पत्ति हो
श्री श्रेयांसकुमारजी जैसी दानवृत्ति हो
श्री जिनशासन की प्रभावना हो।

श्री वीर सं. 2544 श्री विक्रम सं. 2074 मिति कार्तिक वदि 30 गुरुवार तारीख 19-10-2017 को श्री महालक्ष्मी देवी का पूजन शुभ मुहूर्त्त में किया।

बाद में स्वस्तिक पर नागरबेल का पान, लौंग, सुपारी, इलायची, रूपा नाणा आदि रखें। फिर अखंड जलधारा बही के चारों ओर देकर पू. गुरूदेव का अभिमंत्रित वासक्षेप, अक्षत, पुष्प, कुसुमांजलि हाथ में लेकर चोपड़ा के ऊपर कुसुमांजलि करें।

श्री शारदा (सरस्वती) पूजन-विधि

निम्नलिखित श्लोक एवं तत्पश्चात् मंत्र बोलें -

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।।

मंत्र- ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्ध भरते मध्यखण्डे भारत देशे ..... नगरे ममगृहे श्री शारदादेवी आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

आह्वान-ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

स्थापना- ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

संनिधान- ॐ श्री शारदा देवी, मम सानिध्यं कुरू कुरू स्वाहा, अत्र पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

यह कहकर हाथ में ली हुई कुसुमांजलि चढ़ावें।

इस प्रकार स्तुति करने के पश्चात् श्री शारदा देवी की पूजन करें :-

पंचामृत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पंचामृतं समर्पयामि स्वाहा।

(पंचामृत का छांटणा करें)

जल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै जलं समर्पयामि स्वाहा। (जल छांटणा करें)

चन्दन पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै हंसगामिन्यै लोकालोक-प्रकाशिकायै श्री सरस्वत्यै चन्दनं गन्धं समर्पयामि स्वाहा । (चन्दन के छांटणा करें)

पुष्प पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। (पुष्प चढ़ायें)

धूप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै धूपं समर्पयामि स्वाहा। (धूप करें)

दीप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै दीपं समर्पयामि स्वाहा। (दीप करें)

अक्षत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अक्षतं समर्पयामि स्वाहा। (अक्षत चढ़ायें)

नैवेद्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। (नैवेद्य चढ़ायें)

फल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै फलं समर्पयामि स्वाहा। (फल चढ़ायें)

अर्घ्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अर्घ्यं सर्वोपचारान् स्वाहा। (बाकी सब वस्तु चढ़ायें)

इस प्रकार द्रव्य पूजन करने के पश्चात् क्षमापना करें, बाद में श्री सरस्वती स्तोत्र का पाठ करें।

श्री सरस्वती स्तोत्र

तर्ज-हे नाथ तेरे चरणों...

हे शारदे मां हे शारदे मां।
हमें तार दे मां हे शारदे मां ।।
है रूप तेरा उज्ज्वल समुज्ज्वल।
सावन-सा रिमझिम गंगा-सा निर्मल।
जीवन का उपवन संवार दे मां,
हे शारदे मां.....।।१।।
अम्बर से विस्तृत चंदा-सी शीतल।
तुमसे प्रकाशित है सारा भूतल।
अमृत की बूंदें दो-चार दे मां,
हे शारदे मां.....।।२।।
मूरख भी पंडित गूंगा भी वक्ता।
तेरी कृपा से क्या हो न सकता।
अपनी कृपा को विस्तार दे मां,
हे शारदे मां.....।।३।।
साधु भी श्रावक भी तुमको ही ध्यावे।
तेरी अमी से निज भान पावे।
मणिप्रभ को वात्सल्य की धार दे मां,
हे शारदे मां.....।।४।।

उपर्युक्त स्तोत्र बोलने के बाद एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारें।

श्री सरस्वती माता की आरती

जय जय आरती माता तुम्हारी।
आलोकित हो बुद्धि हमारी।।1।।
कर में वीणा पुस्तक सोहे।
धवल कमल सिंहासन मोहे।।2।।
तुझ चरणों में आरती अर्पण।
निर्मल बुद्धि देना हर मन।।3।।
मात सरस्वती के गुण गाउँ।
'मणि' चिन्तामणि विद्या पाउँ।।4।।

फिर इस अष्टक का पाठ करें -

श्री गुरु गौतम स्वामी का अष्टक

अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।दोहा।।
त्रिपदी प्राप्त भगवंत से, द्वादश अंग विचार।
रचना क्षण इक में करे, गुरु गौतम जयकार।।1।।
दीक्षा दी जिसको उसे, केवल हुआ श्रीकार।
बोधिदान में कुशल वर, गुरू गौतम जयकार।।2।।
निज लब्धि से ही चढ़े, अष्टापद सुखकार।
बोधे जृंभक देव को, गुरु गौतम जयकार।।3।।
पन्द्रहसौ तापस तपे, दे प्रतिबोध उदार।
एक पात्र से पारणा, गुरु गौतम जयकार।।4।।
वीर प्रभु निर्वाण सुन, मंथन मनन अपार।
पाई केवल संपदा, गुरु गौतम जयकार।।5।।
जो चाहो सुख संपदा, इष्ट सिद्धि संसार।
सुबह शाम नित नित करो, गुरु गौतम जयकार।।6।।
चरणों में मैं नित करूँ, वंदन विधि अनुसार।
इष्ट सिद्धि वांछित फले, गुरु गौतम जयकार।।7।।
गौतम स्वामी को नमो, जाप करो हर बार।
'मणि' मन वंदन भाव से, गुरु गौतम जयकार।।8।।

उपर्युक्त गौतम अष्टक बोलने के बाद पूर्व या उत्तर दिशा सम्मुख होकर धूप-दीप करके एकाग्रचित्त से निम्नलिखित सरस्वती मंत्र की एक माला गिनें।

श्री सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीँ क्लीं श्रीं ह्रीँ ऐं सरस्वत्यै नमः

।।श्री महालक्ष्मी पूजन-विधि।।

श्री महालक्ष्मीजी मूर्ति, सिक्का, सोना, चांदी इत्यादि पूजन के लिए चांदी की थाली में बहुमान से स्थापित की जानी चाहिए।

मन्त्र और विधि

आह्वान- दो हाथ जोड़कर अनामिका अंगुली के मूल-पर्व को अंगूठे से जोड़ने से आह्वान मुद्रा होती है। इस मुद्रा से यह मंत्र बोलकर आह्वान करें-

1. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.... ....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभांडागार-भरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

स्थापना- दोनों हथेलियों को नीचे की ओर उल्टा करने से स्थापन मुद्रा होती है। इस मुद्रा में यह मंत्र बोलें-

2. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.... .....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार-भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र पूजने तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।
3. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.... .....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार-भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अब महालक्ष्मी देवी का पूजन करें :

1. **जल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि ! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु जलं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
2. **गंध पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु, गंधं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
3. **पुष्प पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।
4. **धूप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
5. **दीप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
6. **अक्षत पूजा**- ॐ आँ क्रौ ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
7. **नैवेद्य पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।
8. **फल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु फलानि गृहाण गृहाण स्वाहा।।
9. **वस्त्र पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा।।

हाथ जोड कर बोलें-

नीर-गन्धाक्षतै र्पुष्पै-नैंवेद्यैर्धूप-दीपकै:।
फलैरर्घ्यं च अर्चामि, सर्वकार्यसुसिद्धये।।

पुष्पांजलि (समर्पित करना)

शान्ति: शान्तिकर: स्वामी, शान्तिधारां प्रवर्षति।
सर्व-लोकस्य शान्त्यर्थं, शान्तिधारां करोम्यहम्।।

जाति-चम्पकमालाद्यै - मोंगरैः पारिजातकैः।
यजमानस्य सौख्यार्थे, सर्वविघ्नोपशान्तये।।

इस प्रकार द्रव्य पूजा के पश्चात् एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारनी चाहिए।

महालक्ष्मी माता की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, हो देवी जय लक्ष्मी माता।
संकट मेरे हर दो, झोली मेरी भर दो,
पाउँ सुखशाता ।।टेर।।
रखवाली तुम जिन शासन की, संघ सकल ध्यावे।
पहली आरती सिद्धि, दूजी सुख पावे।।1।।
छम-छम पायल घुंघरूँ बाजे, स्वर्ण कमल रचना।
पंखुड़ी शोक निवारे, घर बंधे पलना।।2।।
सूरि मंत्र है मंत्र शिरोमणि, महालक्ष्मी सेवा।
आरती श्रद्धा भावे, पावत शिव मेवा।।3।।
महर करो हे लक्ष्मी माता, आशिष दुःख हरे।
घर आंगन में पधारो, भक्त पुकार करे।।4।।
आरती लक्ष्मी वंदन पूजन, ऋद्धि सिद्धि आवे।
मणिमय संपद् पावे, तन मन हरसावे।।5।।

इसके बाद मंत्र बोले :-

कर्पूरपूरेण मनोहरेण, सुवर्णपात्रान्तर-संस्थितेन।
प्रदीप्तभासा सह संगमेन, नीरांजनं ते जगदम्ब! कुर्वे।
।। ॐ श्रीं ह्रीँ क्लीं श्री महालक्ष्म्यै नमः ।।

तत्पश्चात् अक्षत और फूल लेकर कुबेर का पूजन करके कलश के ऊपर चढ़ावें।

आह्वामि देव! त्वाम् इहा याहि कृपां कुरु।
कोष-वर्द्धये नित्यं, त्वम् परिपक्ष सुरेश्वर।।
धनाध्यक्षाय देवाय, नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय, कुबेराय महात्मने।।

फिर काँटा-बाट हो तो तराजू में स्वस्तिक करके फूल चढ़ावें और काँटें पर नींबू लगावें।

नमस्ते सर्वदेवानां, शांतित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षिभूता जगद्धात्री, निर्मिता विश्वयोनिना।।

पूजन में अज्ञानतावश कोई दोष लगा हो, उसके लिए निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए क्षमायाचना करनी चाहिए।

क्षमायाचना

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।1।।
आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजाऽर्चां नैव जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ।।2।।
अपराधासहस्राणि, क्रियन्ते नित्यशो मया।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।3।।

इन श्लोकों द्वारा क्षमायाचना करें।

इति पूजनविधि

इस प्रकार पूजन करने के बाद अनाथ, अपंग, निराश्रित लोगों को यथाशक्ति द्रव्यादिक का दान करना चाहिए और साधर्मिक भाइयों की यथाशक्ति भक्ति का लाभ लेना चाहिए।

दीपावली के जाप

1. **ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी नाथाय नमः**
   प्रथम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।
2. **ॐ ह्रीँ श्री महावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः**
   दूसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।
3. **ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी पारंगताय नमः**
   तीसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।
4. **ॐ ह्रीँ श्रीं गौतमस्वामी-केवलज्ञानाय नमः**
   अंतिम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

इस मंत्र की 20 माला सूर्योदय से पहले चौथे प्रहर में फेरनी चाहिये। बाद में मंदिर में दर्शन-चैत्यवंदन एवं लड्डू चढ़ाने आदि की विधि करें। तत्पश्चात् गुरुदेव को वन्दन करना चाहिए तथा उनके मुखारविन्द से सप्त स्मरण व श्री गौतमरास को एकाग्रतापूर्वक श्रवण करना चाहिए।

गोत्र इतिहास

बरडिया गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

बरडिया गोत्र के इतिहास को जानने के लिये हमें राजा भोज के वर्तमान में प्रवेश करना होगा। धारानगरी पर राजा भोज के शासन के बाद उस राज्य पर तंबरों ने आक्रमण कर मालव देश का राज्य हथिया लिया।

भोजराजा के निहंगपाल, तालणपाल, लक्ष्मणपाल आदि 12 पुत्र थे। वे सभी धारा नगरी को छोड कर मथुरा नगर में निवास करने लगे। मथुरा नगर में निवास करने के कारण वे माथुर कहलाने लगे।

उस समय वि. सं. 954 में आचार्य श्री नेमिचन्द्रसूरि पधारे। लक्ष्मणपाल ने गुरु भगवंत का उपदेश सुना। बहुत भक्ति करने लगा। एक बार उसने गुरु भगवंत से अपनी दशा का वर्णन करते हुए अपनी पीडा व्यक्त की।

आचार्य भगवंत ने फरमाया- धर्म की आराधना करने से ही कार्य सिध होता है। तुमने धर्म सुना है... समझा है। अब इसे फलित करने का समय आ गया है। तुम सत्य धर्म को स्वीकार करो।

आचार्य भगवंत का प्रेरणात्मक उपदेश प्राप्त कर उसने वीतराग परमात्मा का शुध धर्म- जिन धर्म स्वीकार कर लिया।

आचार्य भगवंत ने लाभालाभ का कारण जान कर कहा- तुम्हारे मकान के पीछे के हिस्से में भूमि में बहुत सारा धन दबा हुआ पडा है। लेकिन उसका अधिकाधिक उपयोग धर्मक्षेत्र में करना।

लक्ष्मणपाल ने वैसा ही किया। धन का अथाह निधान प्राप्त कर उसने धर्म मार्ग में उस द्रव्य का सदुपयोग करना प्रारंभ किया।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ के विशाल संघ का आयोजन किया। लक्ष्मणपाल के तीन पुत्र हुए- यशोधर, नारायण एवं महिचन्द्र!

नारायण के दो संतान हुई- एक नाग के आकार वाला लडका व दूसरी लडकी! एक बार वह सर्प की आकृति वाला वह पुत्र रसोई के पास सोया हुआ था। आलोटता हुआ वह चूल्हे के एकदम पास पहुँच गया।

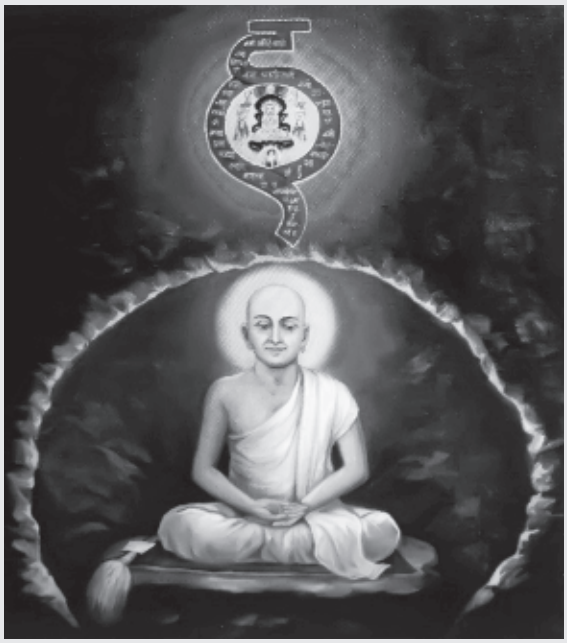

तभी सूर्योदय से थोडा पहले उसकी बहिन पानी गरम करने के लिये वहाँ पहुँची। थोडा अंधेरा था। उस अंधकार में उसे अपना भाई नजर नहीं आया। और चूल्हे में आग लगा दी। वह सर्प आकृति वाला उसका भाई जल कर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

मर कर वह व्यंतर बना। नागदेव के रूप में आकर अपनी बहिन को पीडा देने लगा। विधि विधान कराने पर वह बोला- जब तक मैं व्यंतर योनि में हूँ, तब तक मैं कष्ट देता रहूँगा।

लोग इकट्ठे हुए। वे चिंतन करने लगे- यह बात सही है या गलत! इसकी परीक्षा ली जानी चाहिये। एक व्यक्ति जिसकी कमर में बहुत दर्द रहता था। उसे आगे कर देव से कहा- यदि तूं सच्चा देव है तो इसका दर्द दूर कर दे।

नागदेव ने कहा- जाओ! इस घर की दीवार का स्पर्श कर लो, पीडा दूर हो जायेगी। उसकी कमर स्पर्श करते ही ठीक हो गई। तब नागदेव ने लक्ष्मणपाल को वर दिया कि जिसे भी चणक की पीडा होगी, वह यदि तुम्हारे घर का स्पर्श करेगा तो तीन दिन में वह ठीक हो जायेगा। (शेष पृष्ठ २७ पर)

कहानी

दो शिकारी

मणि चरण रज मुनि समयप्रभसागर

विविधताओं से भरी अरावली शृंखलाएं जहाँ सैकड़ों मीलो तक अपनी उपस्थिति से वहाँ-वहाँ के सौन्दर्य में चार चाँद लगा रही है। कहीं-कहीं हरियाली से पूरी तरह आच्छादित ऊँची-ऊँची चोटियाँ तो कहीं पर अपरिग्रह का पाठ पढ़ाती बहुत कम वनस्पति को अपने आगोश में समेटे छोटे-छोटे पहाड़ों के रूप में।

राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में ऐसी ही थोड़ी कम उँचाई वाले पहाड़ो का समूह उन पर उगी हुई कम पानी में अपना अस्तित्व टिकाए रखने वाली वनस्पतियाँ जैसे- थोर, केर, बबूल और जाल इन वनस्पतियों में रहते है- खरगोश, तीतर, बटेर, आदि प्राणी। पहाड़ी की तलहटी में एक ओर तालाब है जहाँ वर्षा का जल इकट्ठा होता है जो वन्यप्राणी के प्यास बुझाने का मुख्य स्त्रोत।

पहाड़ी के दूसरे छोर पर पत्थर काटने वाली मशीन (जिसे क्रेशर कहते है) इस क्रेशर पर अपनी आजीविका टिकाने वाले लोगों में भील जाति कभी अग्रणी हुआ करती थी। वो यहाँ मजदूरी करके अपना जीवन यापन करते। ऐसे ही परिवारों में दो लड़के (चचेरे भाई) यहाँ काम करते थे। कार्य के अतिरिक्त समय में उन लोगों ने एक दूसरी ही राह पकड़ ली।

इन पहाडियों में खरगोश बहुतायत संख्या में रहते थे। घास फूस उनका भोजन जो वर्षा ऋतु में सुलभ थी ही शेष समय में थोर और केर जैसी वनस्पति में भी अपना भोजन ढूंढ ही लेते और इन्हीं में बिल खोदकर (दर-जो बिल से ज्यादा चोड़ी होती है) में रहते। पानी के लिए नीचे तालाब है। वहां भी पानी और घास दोनों उपलब्ध हो जाते। अपना स्वच्छंद जीवन, निर्भीक जीवन प्रकृति की गोद में अपने परिवार सहित अट्टखेलियाँ करते रहते।

यह अट्ठखेलियाँ जहाँ इन्हें आनन्दित रखती। वहीं इनकी चुस्ती और फूर्ति को बढ़ाने का कार्य करती। रंग बिरंगे खरगोश-मटमेले भूरे और अधिकांशत: सफेद खरगोश। सहज प्राकृतिक जीवन किसी को भी नुकसान न पहुँचाने वाले। लाल-लाल आंखे और ये मुलायम रेसेदार शरीर।

जानवरों ने मानव का भोजन कम ही किया होगा। मगर मानवों ने संभवत: सारे प्राणियों को अपने भोजन में सम्मिलित करने का कार्य कर इंसानियत की जड़े ही हिला दी।

उस परिवार के दोनों भाई फुर्तीले थे और कठोर मेहनती थे। पत्थर तोड़ने का कार्य शारीरिक रूप से बहुत मेहनत का कार्य शक्ति की मांग रखता है। उस जमाने में इतने आधुनिक साधन थे नहीं। अस्त्र के नाम पर हथौड़े (घण-बड़ा हथौड़ा) और साबल और पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़ों को कंकरीट रूप में परिवर्तित करने के लिये थी छोटी-छोटी हथौड़ियां इन दोनों भाईयों की नजरों में यह निरीह खरगोश शिकार के रूप में गहरे बैठ गये। कार्य के अतिरिक्त समय में इनका शिकार शुरू कर दिया।

एक मांसाहारी होटल वाले का इनसे संपर्क हो गया। फिर तो शिकार पर ज्यादा ध्यान देने लगे। खरगोशों के शिकार के लिये सुबह ही सुबह निकल जाते। खरगोशों के पीछे भागते और एक हथौड़ी नुमा शस्त्र इनके पास होता। खरगोशों के पीछे ये भी फुर्ती से भागते और भागते हुए खरगोश पर इतनी तेजी से वार करते क्योंकि इनके निशाने अचूक थे प्राय: खरगोश इनका शिकार बन जाते। इनका निशाने साधने का मुख्य ध्येय होता खरगोश के पाँवो पर वार करना। वार पूरी शक्ति और दूरी के साथ होने से ज्यादा प्रभावी होता। वैसे ही खरगोश मुलायम चमड़ी ऐसी कि थोड़ा सा हाथ जोर से घिस जाये या पकड़ से छूटने का प्रयास करे तो चमड़ी उतरे बिना न रहे। पाँवो की हड्डियां भी प्राय: पतली होने से ज्यादा

मजबूत नहीं होती। थोड़े से वार से चोटिल हो जाय तो इस शिकारी के वार से गंभीर असर हुए बिना न रहे। परिणाम स्वरूप खून गिरना शुरू हो जाता है, भागने की गति भी अत्यन्त धीमी हो जाती है। जान बचाने का प्रयास करें तब तक शिकारी इनको दबोच लेता है। यही क्रम। पैसे की प्राप्ति का लोभ इनको इस ओर ज्यादा ही लुभाने लगा।

लेकिन एक दिन ऐसा हुआ कि एक अजीब ही घटना घटी-दोनों भाई एक अलग-अलग खरगोश के शिकार में मगन थे। खरगोश विपरीत दिशाओं से आ रहे थे। उनका पीछे करते-करते दोनों आमने-सामने आ गये दोनों ने अपने-अपने शिकार के लिए शस्त्र फेंके। संयोग ऐसा कि दोनों खरगोश तो तीव्र गति से निशाने से बच गए मगर इन दोनों को आपस में एक दूसरे द्वारा फेंके शस्त्र लग गए- एक के घुटने पर लगते ही वह वहीं गिर पड़ा तो दूसरे की टांग में लगा। वह थोड़ा दूर आगे जागर गिरा। अचानक का वार और इतना वेग से भरा घुटने में लगने के कारण उठना का प्रयास तो किया मगर उठ न सका। सुबह से ही शिकार की तलाश से ज्यादा भटकने से थका हुआ तो था ही मार लगने से प्यास और गहरी हो गई। अब सिर भी चकराने लगा पहली बार अहसास हुआ कि दर्द क्या होता है। उसे मौत सामने दिखने लगी- पहाड़ी के ऊपर आस-पास पानी भी तो नहीं था।

आगे संतुलन बिगड़ा कि सीधी खाई जहाँ सामने हंसती खिल-खिलाती मौत के दर्शन हो रहे थे। वो बचाने के लिये चिल्लाया तब तक दूसरा भील जिसकी टांग में लगी थी। वो ज्यादा थका भी नहीं था और चोट भी ज्यादा गहरी नहीं थी चलकर पहले वाले के पास आया। पहले वाला .... प्रथम बार इतनी दीन अवस्था में। उसकी दयनीय स्थिति और अपने दर्द (ज्यों-ज्यों देर होती है, त्यों-त्यों चोट का दर्द बढ़ने के कारण) का आज पहली बार अनुभव कर रहा था।

पहले वाला मारे प्यास और दर्द के कारण बचाने की गुहार लगा रहा था। दूसरा स्वयं भी आज अपनी शक्ति को पहली बार खोयी हुई अनुभव कर रहा था।

स्वयं भी लंगड़ा रहा था और फिर पहाडी जहाँ से सहारा देकर लाना आसान न था। फिर भागते-भागते बस्ती से बहुत दूर आ गए थे। कोई उनकी आवाज सुने ऐसा न था। आज पहली बार भगवान की याद आई। आँखों से आंसू की झडी बरसने लगी। आज तक दूसरों को सताया ही था। किसी का दर्द क्या होता है, अहसास ही न हुआ था। स्वयं की वेदना वह भी मात्र थोडे समय की पीड़ा पर कितनी असह्य! अब तक पीड़ा भोग रहे हैं? यह तो मात्र अंग भंग की पीड़ा है। निरीह और निर्दोष प्राणियों के जब प्राण ही हरण कर लिए तो उनकी पीड़ा का क्या हिसाब। पश्चाताप से हृदय भर आया और वो पीड़ा आँखों से आँसुओं के रूप में प्रकटी। प्रभु को प्रार्थना की हमें इस पीडा से बचाओ। अपने पीछे बिलखता परिवार दिखने लगा। मारे भय के पसीना बह रहा है और वचन और मन दोनों प्रार्थना में लीन तो काया कहाँ पीछे रहने वाली सहज ही हाथ जुड गये। प्रभु तो सदा दयालु उनके हृदय की पुकार पहुँची और उनके हृदय बदलने की शुभ घडी का आगमन समझो इस घोर निराशा की घड़ी में भी उजाले की किरण चमकी। एक महात्मा जो कुछ दिन पूर्व ही इन पहाडियों के एकान्त शान्त और निर्जन शांत वातावरण में साधना के लिये आये थे। उनकी साधना आज ही फलित हुई थी। वे साधना पूर्ण कर शहर की तरफ जाने के लिए निकले ही थे कि थोडी ही दूरी पर इन शिकारियों का मिलन हुआ। इनकी दशा देखकर संत का हृदय, जो सदा दया से परिपूर्ण होता ही है। हृदय ने करूणा बरसाई। इनकी याचना और कातर नजरों के कारण सहज ही द्रवित हो गए।

इन शिकारियों की प्रार्थना सुनकर अपने तप को सार्थक जान इनको स्वस्थ किया अपनी दिव्य शक्तियों के द्वारा प्रतिबोधित किया। फलस्वरूप दोनों शिकारियों ने आजीवन मांसाहार और शिकार का त्याग करने का नियम लेने के साथ बस्ती में पधारने का आग्रह भी किया। संत दयाकर बस्ती में पधारे। उपदेश दिया। सारी बस्ती ने सिर्फ मांसाहार और शिकार का त्याग ही नहीं किया बल्कि उन वन्य प्राणियों की सुरक्षा करने का वचन भी दिया। संत अपनी साधना की सिद्धि के रूप में आज ये सौगात पाकर परमात्मा के गुणगान करते हुए आगे के लिए विदा हो गए।

समाचार दर्शन

बीकानेर में तपस्या का लगा मेला

बीकानेर में मासक्षमण संपन्न

बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ठाणा 8 एवं पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 6 की पावन निश्रा में पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया वर्धमान तपाराधिका श्री सुलक्षणाश्रीजी म. सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री प्रियमुद्रांजनाश्रीजी म.सा. के मासक्षमण की तपस्या समाधि के साथ संपन्न हुई।

बीकानेर चातुर्मास प्रवेश के साथ ही उन्होंने तपस्या का प्रारंभ किया था। मासक्षमण तपस्या के उपलक्ष्य में ता. 29 जुलाई 2017 शनिवार से श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, बीकानेर के तत्वावधान में पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया। प्रथम दिन पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा श्री राजेन्द्रकुमारजी रिषभकुमारजी लूणिया परिवार की ओर से पढाई गई। दूसरे दिन पंच परमेष्ठी पूजा का लाभ श्री पन्नालालजी अजयकुमारजी अर्पित हर्षित खजांची परिवार ने लिया। तीसरे दिन श्री गौतमस्वामी पूजा का लाभ श्री चांदरतनजी अशोककुमारजी अरूण अनिल पारख परिवार ने लिया। चौथे दिन 1 अगस्त को भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

शोभायात्रा के पश्चात् तपस्वी अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। पू. तपस्वीजी के मासक्षमण के दिन तप पूरने के लक्ष्य से बहुत श्रावक श्राविकाओं ने उपवास तप किया।

वरघोडे व अभिनंदन समारोह में तपागच्छ के पूज्य पंन्यास प्रवर श्री पुंडरिकरत्न विजयजी म. आदि ठाणा, पार्श्वचन्द्र गच्छ के पूज्य मुनि श्री पुण्यरत्नचंद्रजी म., साधु साध्वी मंडल के साथ पधारे।

अभिनंदन समारोह का कुशल संचालन पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया। इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री, पंन्यास प्रवर, पूज्य मुनिश्री पुण्यरत्नचंद्रजी म., पू. साध्वी श्री जिनेन्द्रप्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि के प्रवचन हुए। पूज्य प्रवरों ने तपस्वी महाराज की भूरि भूरि अनुमोदना की। समारोह एक बजे तक चला। हजारों श्रद्धालु पूरे समारोह में उपस्थित रहे। शोभायात्रा में इतनी भीड पहली बार देखी गई।

बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने अपनी माताजी महाराज के मासक्षमण की अनुमोदना करते हुए उनके उपकारों का वर्णन किया। उन्होंने भी लघु वय होने पर भी तेला तप करके मासक्षमण की अनुमोदना की।

पू. गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. के संदेश का वांचन किया गया।

पू. साध्वी श्री प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म. प्रियसूत्रांजनाश्रीजी म. ने भजन द्वारा अनुमोदना की।

इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ बीकानेर के महामंत्री श्री शांतिलालजी सुराणा, गौहाटी के संदीप खजांची, चेन्नई के महिपालजी कानूंगा आदि ने अपने वक्तव्यों द्वारा तपस्या की अनुमोदना की।

श्री मगनजी कोचर, श्री सुनीलजी पारख, श्री नमन, जिनेश, प्रियल, सौ. आशाजी एवं आरतीजी आदि द्वारा गीतिकाऐं प्रस्तुत की गई।

पू. तपस्वीजी महाराज के गुरु पूजन का लाभ श्री मोतीचंदजी नरेन्द्रकुमारजी राजेशजी खजांची परिवार ने तथा रत्न प्रतिमा अर्पण करने का लाभ श्री मूलचंदजी महावीरचंदजी खजांची परिवार द्वारा लिया गया। पूज्य आचार्य प्रवर ने भी रत्नमयी प्रतिमा तपस्वीजी म. को प्रदान की।

स्वामि वात्सल्य का लाभ श्री पानमलजी धनराजजी सरलादेवी सुरेन्द्र महेन्द्र नाहटा परिवार ने लिया।

दोपहर में पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. के मार्गदर्शन में श्री शांतिस्नात्र महापूजन आयोजित हुआ। जिसका लाभ तपस्वी महाराज के सांसारिक परिवार श्री बस्तीचंदजी महिपालजी नमन जिनेश कानूंगा परिवार फलोदी निवासी वर्तमान चेन्नई वालों ने लिया। रात्रि को संगीत सम्राट् श्री मगनजी कोचर एण्ड मंडली द्वारा भक्ति भावना का भव्य आयोजन किया गया। ता. 2 अगस्त को तपस्वीजी महाराज का पारणा संपन्न हुआ। दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई जिसका लाभ श्री सुन्दरलालजी राजेन्द्रकुमारजी दस्साणी परिवार ने लिया। पूजा, वरघोडा आदि की व्यवस्थाओं में अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् बीकानेर की अनुमोदनीय सहभागिता रही।

स्वाध्याय शिविर संपन्न

बीकानेर नगर में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की केन्द्रीय समिति के तत्वावधान में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में चार दिवसीय स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 25 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

पूज्यश्री ने शिविर का उद्देश्य समझाते हुए कहा– हमें अपने गच्छ के स्वाध्यायी तैयार करने हैं। ताकि वे उन स्थानों पर जाकर जहॉ साधु साध्वीजी भगवंतों का चातुर्मास नहीं है। वहॉ पर्युषण महापर्व की आराधना विधि विधान शास्त्र शुद्धता के साथ करवा सके।

अलग अलग सेशन में पूज्यश्री ने कल्पसूत्र वांचन, अष्टाह्निका प्रवचन वांचन, विधि विधान आदि के संबंध विस्तार से समझाया। स्वाध्यायी प्रकोष्ठ के संयोजक रमेश लूंकड ने इस शिविर का संचालन किया।

शिविर समापन अवसर पर केयुप चेयरमेन संघवी अशोकजी भंसाली, अध्यक्ष रतनजी बोथरा, महामंत्री प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल ने शिविरार्थियों का बहुमान कर उन्हें किट भेंट किया। केयुप बीकानेर के अध्यक्ष राजीव खजांची ने सभी को धन्यवाद दिया।

स्थानक में पर्युषण आराधना करवाई

बीकानेर नगर के स्थानीय श्री शांत क्रान्ति स्थानकवासी संघ की नम्र विनंती स्वीकार कर पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मेहुलप्रभसागरजी म. को उनके संघ में सुन्दर सदन में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के प्रवचन फरमाने भेजा।

पूज्य मुनिश्री ने वहॉ अंतगड सूत्र का विवेचन किया। आठों दिन पूज्यश्री के प्रवचन रहे। स्थानकवासी संघ ने कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने पूज्यश्री की विद्वत्ता और प्रवचन शैली की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। भाद्रपद शुक्ल पंचमी को संवत्सरी के दिन पूज्य आचार्य भगवंत भी पधारे। उनके आगमन व प्रवचन से अत्यन्त हर्ष व आनंद का वातावरण छा गया। श्री संघ में एकता का बहुत ही सुन्दर वातावरण बना।

विनोद सेठिया, बीकानेर

खरतरगच्छ दिवस मनाया गया

पालीताना में संपन्न हुए खरतरगच्छ श्रमण श्रमणी सम्मेलन के निर्णय अनुसार श्रावण शुक्ल षष्ठी शनिवार को बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में खरतरगच्छ दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने खरतरगच्छ की विशिष्टताओं का वर्णन किया।

सभा का संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने जिन शासन के विकास में गच्छ के विविध क्षेत्रों में किये गये कार्यों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा– समस्त गच्छों में प्राचीन गच्छ खरतरगच्छ के आचार्य भगवंतों ने शासन विकास व विस्तार में अभूतपूर्व योगदान अर्पण किया है।

इस अवसर पर पूज्य पं. श्री पुण्डरीकरत्नविजयजी म. ने जिनशासन की महिमा का वर्णन करते हुए गच्छ के योगदान की सराहना की। पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने खरतरगच्छ के अनुयायी विशिष्ट श्रावकों का वर्णन सुनाते हुए प्रेरणा दी कि हमें अपने वर्तमान को उनकी भांति संवारना है। पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. ने पूर्वाचार्य भगवंतों के जीवन के उदाहरण सुनाते हुए गच्छ विकास में योगदान अर्पण करने की प्रेरणा दी।

बाद में पॉवर प्रेजेण्टेशन के माध्यम से पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने गच्छ के इतिहास का सांगोपांग वर्णन किया। दो घंटे तक लगातार चले इस कार्यक्रम से सारी जनता प्रभावित हुई।

उज्जैन अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा हेतु समिति की स्थापना

अतिप्राचीन श्री अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ का शास्त्र शुद्ध जीर्णोद्धार पिछले 8 वर्षों से चल रहा है। यह जीर्णोद्धार पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा व उनकी निश्रा में चल रहा है।

जीर्णोद्धार का कार्य अंतिम चरण में चल रहा है। प्रतिष्ठा के लक्ष्य से ही पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का चातुर्मास इस वर्ष उज्जैन नगर में हो रहा है।

पूजनीया बहिन म. डॉ श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की पावन निश्रा में श्री अवंती पार्श्वनार्थ जैन श्वे. तीर्थ मूर्तिपूजक मारवाडी समाज ट्रस्ट के तत्वावधान में उज्जैन के समस्त ट्रस्टों के पदाधिकारियों की विशाल बैठक हुई। जिसमें बडी संख्या में ट्रस्टी गण पधारे। इस अवसर पर पूजनीया बहिन म. ने फरमाया– अवंती तीर्थ सकल श्री संघ का है। यह प्रतिष्ठा सकल श्री संघ की है। प्रतिष्ठा से सभी को जुडना है।

इस अवसर पर सकल श्री संघ की सहमति से पूजनीया बहिन म. ने मध्य प्रदेश सरकार के मंत्री श्री पारसजी जैन को अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के चेयरमेन एवं संघवी कुशल गुलेच्छा को संयोजक के रूप में घोषणा की।

इस घोषणा से सकल श्री संघ में हर्ष हर्ष छा गया। निर्णय किया गया कि पर्युषण महापर्व के पश्चात् सकल श्री संघ के साथ बीकानेर पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री की सेवा में जाकर मुहूर्त्त प्राप्त करेंगे।

केयुप द्वारा पर्युषण आराधना

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्, केयुप द्वारा राजस्थान, महाराष्ट्र, आसाम, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में स्थान स्थान पर पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना करवाई गई।

गौहाटी में केयुप महामंत्री प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल मुंबई व खडगपुर के विवेक झाबक ने, शहादा में केयुप सहमंत्री रमेश लूंकड इचलकरंजी व रमेश छाजेड इचलकरंजी ने, खेतिया में मुमुक्षु अमित बाफना गदग व मुमुक्षु रजत सेठिया चौहटन ने, मकराणा में श्री भूपतजी चौपडा पचपदरा व प्रमोदकुमारजी भंसाली, मलकापुर, इचलकरंजी में बाबुलालजी मालू व संपतजी संखलेचा ने पर्युषण महापर्व की आराधना करवाई। इन सभी को बीकानेर में चार दिवसीय शिविर में प्रवचन आदि का प्रशिक्षण दिया गया था। सभी संघों ने भूरि भूरि अनुमोदना की। इन सभी का बहुमान केयुप के बीकानेर में होने वाले अधिवेशन में किया जायेगा।

बीकानेर में ज्ञान वाटिका का शुभारंभ

बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वर जी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छा–धिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा व प्रेरणा से बीकानेर नगर में अखिल भारतीय खरतर–गच्छ युवा परिषद् बीकानेर शाखा द्वारा ज्ञान वाटिका का शुभारंभ किया गया।

इस ज्ञान वाटिका के संचालन में पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. सा. आदि साध्वी मंडल अपना पूरा योगदान अर्पण कर रहा है। इस ज्ञान वाटिका में लगभग सवा सौ बालक बालिकाऐं ज्ञानार्जन कर रहे हैं।

ज्ञान वाटिका का उद्घाटन श्रावण सुदि 7 रविवार ता. 30 जुलाई 2017 को श्री सुगनजी म. के उपाश्रय में श्रेष्ठिप्रवर श्री थानमलजी बोथरा परिवार द्वारा किया गया। उन्होंने एक वर्ष का पूर्ण लाभ प्राप्त करके ज्ञान के क्षेत्र में अपना योगदान अर्पण किया है। जैन श्वे. खरतरगच्छ श्री संघ के अध्यक्ष श्री पन्नालालजी खजांची, श्री चिंतामणि आदिनाथ प्रन्यास के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमारजी धारीवाल, सुगनजी उपासरा ट्रस्ट के मंत्री श्री रतनलालजी नाहटा आदि सकल श्री संघ के उपस्थिति में उद्घाटन विधान पूज्यश्री के मंत्रोच्चारणों के साथ संपन्न हुआ।

गाजियाबाद में 35 उपवास की महान् तपस्या

गाजियाबाद की पुण्यधरा पर प.पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति मरुधरमणि आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शान्तमूर्ति साध्वी श्री महेन्द्रप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या डॉ साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णा श्रीजी म.सा. (डीलिट्) की चरणाश्रिता सेवाभावी तपस्वीरत्ना बालसाध्वी श्री भव्यपूर्णा श्रीजी म.सा. के 35 उपवास का पारणा ता. 11 अगस्त को मणिगुरु की असीम कृपा से एवं सकल श्री संघ की उपस्थिति में जयकारों के नारों से सानंद सम्पन्न हुआ। तपस्वी शाता में है। तपस्या की खूब खूब अनुमोदना। तपस्वी ने छोटी उम्र में इतना बडा महान तप करके गाजियाबाद में तप का डंका बजा दिया है। उनकी तपस्या के उपलक्ष्य में परमात्मा की पूजा, अभिनंदन समारोह आदि का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बाहर से बडी संख्या में श्रावक श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

मयुर मन्दिर जिन हरि विहार में जन्म वांचन

परमात्मा महावीर स्वामी भगवान के जन्म वाचन के शुभ अवसर पर खरतरगच्छ समाचार पालिताणा पं. पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसुरीश्वरजी महाराज के आज्ञानुवर्ति पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. सा. आदि ठाणा 4 व पूज्य खानदेश शिरोमणि महत्तरा पद विभुषिता श्री दिव्यप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 पूज्य प्रर्वतिनी महोदया शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या प्रियदर्शना श्रीजी आदि ठाणा 5 व पूज्य मृगावति श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की निश्रा में श्री आदिनाथ मयूर मन्दिर श्री जिनहरि विहार धर्मशाला पालिताणा जी तीर्थ में परमात्मा महावीर स्वामी भगवान के जन्म वाचन के शुभ दिन चढ़ावे लेने पधारे सभी मेहमानो ने अपना पुरा जोर राशि का सदुपयोग किया। खरतरगच्छ के कई श्रावक हर वर्ष की भाँति महापर्व पर्युषण करने यहाँ पधारते है। हर वर्ष की भाँति हरि विहार के महामंत्री बाबुलाजी लुणिया, ट्रस्टी रतनलालजी बोथरा, युवा परिषद अहमदाबाद के कर्मठ कार्यकर्ता भैरुभाई लुणिया आयुष गोलेछा, कुशल वाटिका बाड़मेर के पदाधिकारी बाबुलालजी टी. बोथरा, मांगीलालजी मालु सुरत, जगदीश जी भंसाली पाली, गौतमजी हालावाले सुरत एवं बाहर से पधारे सभी महानुभवो ने परमात्मा महावीर स्वामी भगवान का वाचन पूज्य महत्तरा दिव्यप्रभा श्रीजी म.सा. के मुखारविन्द से उल्लास पूर्वक सुना।

मुंबई में धर्म आराधना का ठाठ

मुंबई के पांजरापोल क्षेत्र में स्थित कपोलवाड़ी में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ सांचोर के तत्वावधान में चातुर्मास बिराजित पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्याएं विदुषी आर्या रत्ना श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा., पूज्य श्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा., पूज्य श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा., पूज्य श्री सत्वबोधिश्रीजी म. सा. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में धर्म आराधना का ठाठ लगा हुआ है। चातुर्मास के प्रारंभ से ही श्रावक श्राविकाओं का ताता लगा हुआ है। प्रतिदिन प्रात: प्रवचन का आयोजन होता है। जिसमें गुरुवर्या श्रीजी के श्रीमुख से जिनागम एवं जैन आचार के विविध विषयों सहित कई प्रसंगोपात विषयों पर प्रवचन श्रवण कर सभी धन्यता का अनुभव करते हैं। उपरांत प्रश्न मंच, जैन अन्ताक्षरी, धार्मिक हाउजी जैसे विविध ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

ऐसे ही आयोजनों की कड़ी में गुरुवर्या श्री जी सद्प्रेरणा से दि. 20, 21 एवं 22 जुलाई को सामूहिक चंदनबाला के तेले का आयोजन हुआ जिसकी पूर्णाहुति रविवार 23 जुलाई को चंदनबाला की जीवनी पर आधारित भव्य संगीतमय नाटिका एवं तदुपरांत उड़द के बाकुले से आयम्बिल के रूप में हुई संघ के छोटे छोटे बालकों द्वारा चंदनबाला के जीवन की कई घटनाओं को जीवंत किया मंत्रमुग्ध करने वाले कार्यक्रम को निहार कर प्रवचन मंडप में उपस्थित सेंकडों भक्त भाव विभोर हो गए।

कार्यक्रम के पश्चात सभी तपस्वियों को उड़द के बाकुले वहेराकर आयम्बिल कराया गया। सोमवार को समस्त तपस्वियों का शाही पारणा हुआ। इस अवसर पर धन सार्थवाह शेठ बनकर बाकुले वहोराने का एवं सभी तपस्वियों के पारणे का लाभ सांचोर निवासी श्रीमान् शा. कालुचंदजी कसाजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार ने लिया। संघ के अध्यक्ष मांगीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल ने सभी तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए लाभार्थी परिवार का नाटिका में भाग लेने वाले सभी बालकों का एवं उपस्थित सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। सम्पूर्ण आयोजन में संघ के सभी कार्यकर्ताओं एवं श्री मणिधारी युवा परिषद् के सदस्यों का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

धनपत कानुंगो, मुंबई

बहिन म. के 36वीं ओली का पारणा

उज्जैन नगर में चातुर्मासार्थ बिराजमान पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के 36वीं ओली का पारणा भाद्रपद वदि 1 को संपन्न हुआ।

उज्जैन नगर में चातुर्मासार्थ प्रवेश करने के तुरन्त बाद उन्होंने वर्धमान तप की 36वीं ओली का प्रारंभ किया था।

इस तप के उपलक्ष्य में पूजनीया गुरुवर्याश्री का अभिनंदन किया गया। तथा इस उपलक्ष्य में महोत्सव का आयोजन किया गया। श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ के पावन परिसर में श्री कल्याण मंदिर महापूजन का भव्य आयोजन किया गया। विधि विधान कराने श्री अरविन्दजी चौरडिया पधारे थे। इस अवसर पर श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ की प्रतिष्ठा के शुभ मुहूर्त्त की उद्घोषणा करने का चढावा प्रारंभ किया गया।

उदयपुर में खरतरगच्छ दिवस मनाया गया

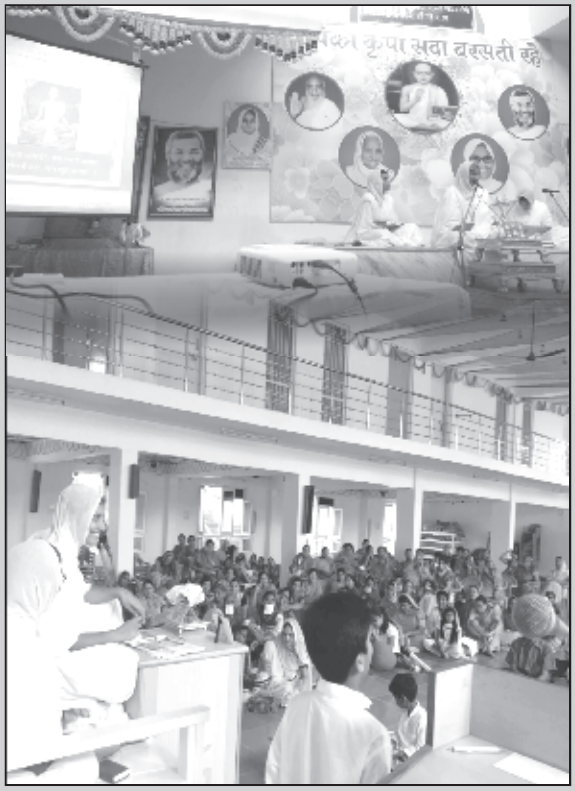

प. पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आज्ञानुवर्तिनी पूज्या बहिन महाराज डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री डॉ. नीलांजना श्रीजी म.सा. की निश्रा में खरतरगच्छ दिवस को विविध उपक्रमों के साथ मनाया गया।

प्रात: 9 बजे मंगलाचरण के साथ ही साध्वी जी महाराज ने जिनेश्वरसूरि से जिनमणिप्रभसूरि तक खरतरगच्छ की महिमा ऐतिहासिक परंपरा पर रोचक शैली में विवेचन प्रस्तुत किया जिसे सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो उठे। साध्वी श्री के विवेचन के साथ ही पावर प्रेजेंटेशन के माध्यम से साधक महापुरुषों का चित्रात्मक शो भी प्रस्तुत किया गया। उससे पूर्व जयपुर से पधारे डॉ. सुषमाजी सिंघवी ने खरतरगच्छ के दिव्य इतिहास पर प्रकाश डाला। बाद में खरतरगच्छ प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें बालक बालिका श्रावक श्राविकाओं ने अपने भाव व्यक्त किये। जिसके निर्णायक बने श्री गजेन्द्रजी भंसाली। प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार के साथ ही सभी को सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। इस प्रकार भव्यता के साथ उदयपुर में खरतरगच्छ दिवस मनाया गया।

सूरत में मासक्षमण

सूरत नगर में पाल रोड स्थित कुशल वाटिका में चातुर्मासार्थ बिराजमान पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विपुलप्रभाश्रीजी म. के मासक्षमण की महान् तपस्या सानन्द संपन्न हुई। इस तपस्या के उपलक्ष्य में ता. 3 अगस्त को भव्य वरघोडे का आयोजन किया गया। ता. 5 अगस्त को उनका पारणा संपन्न हुआ। तपस्या की भूरि भूरि अनुमोदना की गई। सांझी, गीत, अभिनंदन समारोह आदि का आयोजन किया गया। पूजाऐं पढाई गई।

बकेला में आराधना का ठाट

बकेला तीर्थ छत्तीसगढ़ की धर्मधरा पर 29 जुलाई को 68 दिवसीय श्री अखंड नवकार जाप का विधिवत शुभारंभ बड़ी संख्या में उपस्थित जनसमुदाय द्वारा भगवान बकेला पार्श्वनाथ के जयघोष के साथ हुआ। खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणी, महत्तरा पद विभूषिता श्री मनोहर श्री जी म.सा. की सुशिष्याएं मंडल प्रमुखा श्री मनोरंजना श्री जी म.सा. सरलमना श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. नवकार जपेश्वरी श्री शुभंकरा श्री जी म.सा. आदि ठाणा 7 की पावन निश्रा में तीर्थ परिसर में सर्वप्रथम कुम्भ स्थापना, दीप स्थापना, अष्टमंगल, नवग्रह, दस दिकपाल आदि पूजन, आरती, शान्ति कलश आदि हुआ। तत्पश्चात् मंत्रोच्चार के साथ महामंत्र नवकार के जाप शुभारंभ हुआ।

इसके पूर्व खरतरगच्छ स्थापना दिवस के प्रसंग पर गुरुवर्या श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. ने इतिहास बताते हुए पूर्वाचार्यों को नमन किया।

कार्यक्रम में क्षेत्रीय विधायक व संसदीय सचिव छत्तीसगढ़ शासन श्री मोतीलाल चंद्रवंशी ने उपस्थित होकर आशीर्वाद प्राप्त किया। नवकार दरबार प्रारम्भ के अवसर पर शिवपुरी, मुम्बई, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, भिलाई, बिलासपुर, मुंगेली, पंडरिया, कवर्धा, सहसपुर लोहारा, भाटापारा, धमतरी, डौण्डी, दाढ़ी, महासमुंद, भानुप्रतापपुर, राजिम, परपोड़ी, अहिवारा, खरियार रोड़, कोंडागांव, कुई कुदकुर सहित अन्य कई स्थानों से श्रद्धालुगण उपस्थित हुए।

सुरत में खरतरगच्छ दिवस मनाया गया

सुरत : पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज की आज्ञा से परम पूज्य स्व. प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पू. बहिन म. डॉ. साध्वी रत्ना श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या परम पूज्य साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का 2017 का चातुर्मास डायमंड एवं सिल्क सिटी के नाम से विश्वविख्यात सूरत शहर की पावन धरा पर कुशल दर्शन सोसायटी, पर्वत पाटिया में बड़े ही ठाठ बाट से धार्मिक क्रियाओं के साथ चल रहा है। पूज्याश्री की निश्रा में खरतरगच्छ दिवस मनाया गया। पूज्य साध्वी डॉ. श्री शासन प्रभा श्रीजी ने इस पुनीत अवसर पर कहा कि गौरवशाली गच्छ की स्थापना आज से 999 वर्ष पूर्व विक्रम संवत 1075 में गुजरात की राजधानी पाटण में हुई थी, जिस नगर का इतिहास न केवल खरतरगच्छ के साथ जुड़ा हुआ है बल्कि संपूर्ण जैन समाज, सकल संघ के साथ सम्बन्ध रहा है। पाटण में अद्‌भुत क्रांति हुई थी, एक ऐसी क्रांति का बीजारोपण हुआ था कि जिस बीज पर फला फूला विशाल वट वृक्ष जो आज आम आदमी को ठंडी छांव प्रदान कर रहा है। भगवान् महावीर के शासन को 25 सौ वर्ष से अधिक वर्ष हो गए हैं, भगवान् महावीर का शासन आज अविच्छिन्न रूप से चल रहा है, गतिशील है, इस गति को प्रगति के शिखर पर बढ़ाने में अनेक आचार्यों का समय समय पर योगदान रहा है। सबसे पुराना गच्छ खरतरगच्छ भी 999 वर्षों से प्रगति पर है। इस अवसर पर साध्वी जी ने कहा कि हम सभी को गच्छ की परम्पराओं, नियमों, आगमों, जिनवाणी, दादा गुरुदेव के बताये मार्ग पर चल कर उनका पालन करना चाहिए।

चंपालाल छाजेड़, पत्रकार सूरत

उज्जैन में खरतरगच्छ दिवस मनाया गया

उज्जैन की धन्य धरा पर खरतरगच्छ दिवस चातुर्मास हेतु विराजित परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी परम पूज्य माता जी महाराज साध्वीश्री रतनमाला श्रीजी म.सा. एवं बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रा में मनाया गया। पूजनीया म.सा. ने फरमाया कि खरतरगच्छ की परंपरा ग्रंथों द्वारा प्राप्त आधार पर सबसे प्राचीन गच्छ परंपरा है। जिनशासन में खरतरगच्छ का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आचार्य जिनेश्वरसूरि द्वारा चैत्यवासी साधुओं के शिथिलाचार व्यवहार के विरूद्ध वीतराग प्ररूपित कठोर मर्यादित अनुशासित साधुचर्या से दुर्लभ राजा द्वारा खरे (खरतर) की उपाधि प्राप्त की, वही आगे चलकर जिनेश्वरसूरि की परंपरा खरतरगच्छ कहलाई। खरतरगच्छ में अनेक प्रभावशाली आचार्य, उपाध्याय एवं मुनि हुए हैं। पूज्य साध्वी जी महाराज सा. ने बड़े विस्तार से खरतरगच्छ के इतिहास में हुए नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरि, श्री जिनवल्लभसूरि, दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि, श्री मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, जिनकुशलसूरि, अकबर प्रतिबोधक जिनचन्द्रसूरि, श्री आनंदघन जी महाराज, श्री देवचंद जी महाराज, श्री क्षमाकल्याण जी महाराज, गणनायक श्री सुखसागरजी म. के जीवन चरित्र एवं उनके द्वारा किए गए कार्यों का विस्तृत वर्णत किया। पावर प्रेजेंटेशन द्वारा इन महापुरुषों के जीवन चरित्र को दिखाया गया। बाहर से पधारे श्री महावीर स्वामी ट्रस्ट, कल्याण के पदाधिकारियों का स्वागत श्री अवंती पार्श्वनाथ ट्रस्ट द्वारा किया गया।

ब्यावर में महापूजन

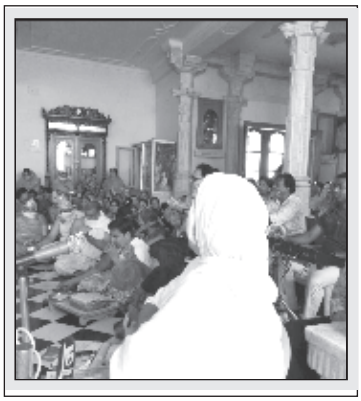

रविवार दिनांक 30 जुलाई 2017 को श्री गणधर गौतम स्वामी महापूजन का आयोजन वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पूज्य प्रवर्तिनी श्री प्रमोद श्रीजी म.सा. की सुशिष्या वाणीसिद्ध राजेन्द्र श्रीजी विजेन्द्र श्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता पूज्य मालवा मेवाड़ ज्योति साध्वी श्री गुणंरजना श्रीजी म.सा. की निश्रा में हर्षोल्लास से आयोजित किया गया। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का लाभ श्रीमान कन्हैयालाल जी रतनलाल जी चन्द्रकुमार जी श्रीश्रीमाल (हालावाले) परिवार ने लिया। कार्यक्रम में संपूर्ण व्यवस्था श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ नवयुवक मंडल एवं श्री कुशल महिला मंडल ने संभाली।

रायपुर में सकल जैन श्रीसंघ का क्षमापना समारोह सम्पन्न

जिनकुशलसूरि जैन दादाबाड़ी, एमजीरोड में सकलश्रीसंघ का सामूहिक क्षमापना समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर पू. साध्वी श्रीरत्ननिधिश्रीजी म. आदि का प्रवचन आयोजित किया गया।

इसी क्रम में विशेष अतिथि रायपुर उत्तर के विधायक श्रीचंद सुंदरानी, श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष तिलोकचंद बरड़िया, ट्रस्टी प्रकाशचंद सुराना, स्थानकवासी जैन समाज, समता युवा संघ सहित वर्धमान स्थानकवासी संघ एवं श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज आदि ने सकल श्रीसंघ से क्षमायाचना की। सभा का संचालन युवा सुश्रावक सुरेश भंसाली, डॉ. धरमचंद रामपुरिया, हरीश डागा ने किया। इस प्रसंग पर नन्हीं बालिका दृष्टि भंसाली, पाकी भंसाली व ख्याति कोचर ने क्षमागीतों की मधुर प्रस्तुति देकर क्षमागुण पर प्रेरक संदेश दिए।

पंच परमेष्ठी श्रेणी तप के तपस्वियों का हुआ पारणा

प्रचार सचिव मानस कोचर ने बताया कि सोमवार को पंचपरमेश्ठि श्रेणी तप के तपस्वियों का सुबह 9.45 बजे से पारणा कराया गया।

महेन्द्रकोचर

वर्षीतप समिति ने तपस्वियों का किया बहुमान

बाड़मेर, 1 सितम्बर। जैन साधर्मिक वर्षीतप समिति बाड़मेर की ओर से संचालित वर्षीतप आराधना में शुक्रवार को जैन समाज के विभिन्न तप आरधकों व मुमुक्षु श्रावक–श्राविकाओं का अभिनन्दन व बहुमान किया गया।

समिति के सदस्य बाबूलाल बोथरा व कैलाश धारीवाल ने बताया कि इस दौरान मुमुक्षु शुभम सिंघवी व 32 उपवास के तपस्वी रामलाल एम. वडेरा, पूजा छाजेड़, भावना गोलेच्छा, पूरी छाजेड़ सहित कई तपस्वियों का अभिनन्दन पत्र देकर बहुमान व स्वागत किया गया।

समिति के सदस्य मांगीलाल गोलेच्छा व गौतम संखलेचा ने बताया कि जैन साधर्मिक वर्षीतप समिति बाड़मेर की ओर से चलाये जा रहे वर्षीतप आराधना में जैन समाज के सौ से अधिक श्रावक–श्राविकाएं वर्षीतप की आराधना कर रहे है जिनकी सेवा में वर्षीतप समिति द्वारा सामुहिक बियासने की व्यवस्था स्थानीय ढ़ाणी जैन धर्मशाला में की जा रही है। ये जानकारी संजय छाजेड़ ने दी।

दिल्ली में चातुर्मास का अनुठा माहौल

दिल्ली महानगर की पावन धरा पर चांदनी चौक श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ समाज के तत्वावधान में परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागर जी म.सा. एवं पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में पर्युषण महापर्व की आराधना तपस्या साधना के साथ परिपूर्ण हुई।

मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. ने प्रवचन में श्रावकों के कर्तव्यों का विस्तार से वर्णन किया। कल्प सूत्र की महिमा बताते हुए कहा कि यह सूत्र हमारे जीवन का प्रतिबिंब है। साध्य, साधन और साधक तीनों की प्ररूपणा इसमें है। भगवान महावीर का जीवन व समता हमारे जीवन में रूपांतरण हो जाए तो हमारे जीवन में भी सुख शांति का निवास हो सकता है। श्रावण सुदि षष्ठी को खरतरगच्छ दिवस मनाया गया। जिसमें मुनिराजश्री ने खरतरगच्छ की परंपरा और विरासत के बारे में विस्तार से बताकर गच्छ में प्रगति और उन्नति में सहभागिता निभाने का उद्‌बोधन दिया। चातुर्मास में ग्यारह उपवास, आठ उपवास, तीन उपवास की तपस्या बडी संख्या में हुई। सभी तपस्वियों का श्रीसंघ की तरफ से अभिनंदन किया गया।

केयुप मुंबई शाखा द्वारा मंदबुद्धि विद्यालय में भोजन का आयोजन

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद की मुंबई शाखा द्वारा पर्युषण महापर्व के अवसर पर प्रथम दिन मंदबुद्धि विद्यालय के बच्चों के लिए भोजन एवं उपहार का आयोजन किया गया। प. पू. साध्वीजी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा. की शुभ निश्रा में आयोजित इस आयोजन का लाभ श्रीमान रमणलालजी चुन्नीलालजी गांधी परिवार ने लिया, गुरुवर्याश्रीजी के साथ परिषद् के कार्यकर्ताओं ने विद्यालय का अवलोकन करते हुए इन विशिष्ट बालकों द्वारा किये गये कार्यों एवं उनके द्वारा निर्मित विभिन्न वस्तुओं का निरीक्षण किया। बच्चों द्वारा बने सामान को देखकर उपस्थित सभी महानुभव दंग रह गये। कार्यक्रम में खरतरगच्छ संघ मुंबई के भूतपर्वू अध्यक्ष श्री मांगीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, केयुप के राष्ट्रिय संयोजक (प्रचार प्रसार) श्री धनपतजी कानुंगो, राष्ट्रिय सह सचिव श्री राजेशजी छाजेड़, राष्ट्रिय कार्यकारिणी सदस्य श्री पवनराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, श्री मुकेशजी मरडीया, मुंबई शाख के अध्यक्ष श्री चम्पालालजी वाघेला सहित कार्यकारिणी सदस्य जुगराजजी मोलाणी, किशोरजी बोथरा आदि उपस्थित थे।

विद्यालय के सभी बच्चों को विशेष भोजन कराया गया। भोजन के बाद सभी बच्चों को सुंदर उपहार स्वरुप भेंट दी गई। शाखा के सचिव महेन्द्र श्रीश्रीश्रीमाल ने उपस्थित सभी महानुभावों को धन्यवाद देते हुए लाभार्थी परिवार का आभार प्रकट किया। महेन्द्र श्रीश्रीश्रीमाल ने बताया कि पर्युषण के आगामी दिनों में जीवदया का कार्यक्रम श्रीमान् नेमीचंदजी विरधीचन्दजी गाँधी परिवार के सोजन्य से आयोजित किया जायेगा, जिसके अंतर्गत माधवबाग स्थित गौशाला में पशुओं को गुड-चारा एवं पक्षियों को दाना आदि दिया जायेगा। केयुप मुंबई शाखा के अन्तर्गत चौथे दादा गुरुदेव श्री जिनचंद्रसूरीजी म.सा. की 404 वीं पुण्यतिथि निमित्ते भायखला दादावाड़ी की भव्य चैत्य परिपाटी का अयोजन पूज्य गुरुवर्या श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाना की निश्रा में 8 सितम्बर को किया जायेगा एवं 10 सितम्बर को कोसबाड, तलासरी, नंदीग्राम आदि तीर्थो के एक दिवसीय चैत्य परिपाटी का आयोजन किया गया। दोनों आयोजनों का लाभ श्रीमान् सिरेमलजी भीखाजी मरडीया परिवार ने लिया है।

बरडिया गोत्र का इतिहास

(शेषपृष्ठ 10का)

देव ने उसे वर दिया, इस आधार पर बरडिया गोत्र की स्थापना हो गई। उसका परिवार बरडिया कहलाने लगा। उन्हीं नेमिचन्द्रसूरि के तीसरे पाट पर आचार्य जिनेश्वरसूरि हुए जिन्हें खरतर बिरूद मिला।

एक अन्य उल्लेख के अनुसार इस गोत्र की उत्पत्ति पंवार वंशीय राजपूतों से मानी जाती है। पंवार लखनसी के पुत्र बेरसी को आचार्य उद्योतनसूरि की प्रेरणा मिली। उनके उपदेशों को प्राप्त कर उसके परिवार ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। चूंकि उसे आचार्य भगवंत ने बड के नीचे उपदेश देकर जैन बनाया था, इस कारण उनका गोत्र 'बड दिया' हुआ। कालांतर में बडदिया बरडिया हो गया।

जैन सम्प्रदाय शिक्षा के अनुसार राजा भोज के वंशज लक्ष्मणपाल मथुरा से कैकेई ग्राम जा बसे। वहाँ संवत् 1037 में आचार्य श्री वर्धमानसूरि (खरतरबिरूद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि के गुरु महाराज) की प्रेरणा से जैन धर्म ग्रहण कर लिया। व्यंतर देव के द्वारा वर देने के कारण उनके वंशज वरदिया कहलाने लगे।

बरडिया गोत्र में समराशाह हुए, जो जैसलमेर के दीवान रहे थे। उनके पुत्र मूलराज भी वर्षो तक जेसलमेर के दीवान रहे। वर्षों तक मूलराजजी के वंशजों ने जैसलमेर के मंदिरों की व्यवस्था सम्हाली।

जैसलमेर के ही बरडिया दीपा ने वि. सं. 1413 में जैसलमेर के किले में महावीर स्वामी प्रभु का मंदिर बनवाया। जैसलमेर के मेहता रामसिंहजी बरडिया ने अपनी हवेली में जैन मंदिर का निर्माण कराया था। इसी प्रकार मेहता धनराजजी बरडिया ने भी अपनी हवेली में जिन मंदिर का निर्माण कराया था।

साध्वी प्रियविनयांजनाश्रीजी व साध्वी प्रियमंत्रांजना श्रीजी ये दोनों बहिनें बरडिया गोत्र के रत्न हैं जो संयम की आराधना कर रहे हैं।

धूले में खरतरगच्छ दिवस एवं श्री नेमिनाथ जन्म कल्याणक मनाया गया

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया समुदायाध्यक्षा श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का धूले नगर में चातुर्मास की आराधना अत्यन्त आनंद व उल्लास के वातावरण में संपन्न हो रहा है। विविध कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। श्रावण शुक्ला छठ के दिन खरतरगच्छ दिवस मनाया गया। पू. साध्वी म.सा. ने गच्छों के भेद व उनमें अभिन्नता का विवेचन व्यवस्थित रूप से किया। बहुतजनों के दिलो दिमाग में नाना प्रकार की शंकाएँ घर कर गई थी, उसका निवारण हो गया।

साध्वीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से स्टेज प्रोग्राम अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना के रूप में श्री धुलिया संघ के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से अंकित हो गया। वास्तव में संघ के लिये यह एक नवतर प्रयोग था, साध्वीजी म.सा. के कारण यह अनमोल आनंददायी अहसास हमें प्राप्त हुआ। चौदह स्वप्नों का दृश्य हो, कृष्ण-गोपियों के नृत्य का दृश्य हो, महाराजा की उदासी का दृश्य हो, प्रियंवदा के द्वारा बधाई का दृश्य हो, भूआसा के द्वारा नामकरण का दृश्य हो, नेमकुमार की बारात का दृश्य हो, राजुल के विलाप का दृश्य हो एवं अन्य सभी दृश्य अपने आप में मानो दिलो-दिमाग को उसी पुरानी दुनिया में ले जाते थे। संगीतकार भरतभाई ओसवाल ने कार्यक्रम में चार-चांद लगा दिये थे। संघ के अध्यक्ष उपाध्यक्ष ट्रस्टी गण एवं सकल संघ का पूर्ण सहयोग रहा।

पालीताणा में धर्म आराधना

खरतरगच्छ संघ में प.पू. मोहनलालजी म.सा. के समुदाय में गणीवर्य प.पू. बुद्धिमुनिजी म.सा. के शिष्यरत्न व्याख्यानवाचस्पति प.पू. जयानंद मुनि म.सा. के सेवाभावी शिष्यरत्न पंन्यास प्रवर विनय कुशलमुनि म.सा. के 18 महिने के दीर्घ कालीन योगोद्वहन की क्रिया में अंतिम योग भगवती सूत्र के योग दिनांक 13.7.2017 को पूर्ण हुए। दिनांक 14.7.2017 को पालीताणा में पारणा संपन्न हुआ था।

इस प्रसंग पर प.पू. कुशलमुनि म.सा. की निश्रा में चातुर्मास के संपूर्ण लाभार्थी परिवार श्रीमती विमलादेवी, टी. आर.जैन परिवार के राहुल जैन और विविध शहरों से भक्तजन पधारे।

शासनरत्न श्री मनोज हरण के मार्गदर्शन में साधर्मिक भक्ति के लिए फंड का निर्माण किया। योगानुयोग 78 वर्ष पहले मोहनलालजी म.सा. के संप्रदाय में खरतरगच्छ संघ में भगवती सूत्र के योग विक्रम संवत 1995 में पालीताणा की पावन भूमि पर प.पू. बुद्धिमुनि म.सा., प.पू. प्रेममुनिजी म.सा. ने साधना करके गणीवर्य पदवी प्राप्त की थी। 78 वर्ष के बाद सिद्धाचल की पावन भूमि में पंन्यास प्रवर विनय कुशलमुनि म.सा. का भगवती योग साधना का पारणा किया।

चौहटन श्री संघ में एकता हुई

चौहटन जैन श्वे. मूर्त्तिपूजक श्री संघ के सारे मतभेद समाप्त होकर एकता का अनूठा वातावरण बना।

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न ब्रह्मसर, बकेला तीर्थोद्धारक वशीमालाणी उपाध्याय पद विभूषिता श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. के प्रभावशाली प्रवचनों व उनके एकता समन्वय भरे प्रयत्नों के परिणाम स्वरुप यह एकता संभव हुई।

श्री संघ में एकता होने से अपार हर्ष व प्रसन्नता फैल गई। स्वामिवात्सल्य हुए। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना आदि सभी कार्यक्रम अद्वितीय अभूतपूर्व रहे।

चालीसगांव में चातुर्मास का ठाठ

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं प.पू. महत्तरा पद विभुषिता श्री चंपाश्री जी म.सा. की विदुषी शिष्या गच्छगणिनी साध्वी सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. साध्वी हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा 5 की पावन निश्रा में श्री महावीर स्वामी श्वेतांबर जैन मूर्तिपूजक संघ चालीसगांव के तत्त्वावधान में चातुर्मास की आराधना सुंदर रूप से चल रही है। प्रतिदिन प्रवचन, साप्ताहिक शिवीर, प्रश्नोत्तरी आदि सभी में पूरा गांव उमड़ रहा है।

चातुर्मास में तेला, आठ उपवास, मासक्षमण, सिद्धितप आदि अनेक तप का आयोजन किया गया है। जिसमें बालकों ने विशेष रूप से भाग लिया।

विशेष कार्यक्रमों में 'अम्मावस को चांद उगायो' नाटिका का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें नन्हें बच्चों ने अपने उत्साह को गुरुभक्ति से ओतप्रोत करते हुए भव्य रूप दिया। शासन माता के थाल का भी आयोजन किया गया।

गुरुवर्याश्री के दर्शन हेतु भी बाहर गांव से अनेक गुरुभक्तों का आगमन प्रतिदिन हो रहा है। जिसमें हैद्राबाद, त्रिची, हुबली, नंदुरबार, सोलापुर आदि प्रमुख है।

प्रेषक मुमुक्षु शुभम लुंकड़

बीकानेर में सम्पन्न मासक्षमण की झलकियाँ

बीकानेर में सम्पन्न मासक्षमण की झलकियाँ

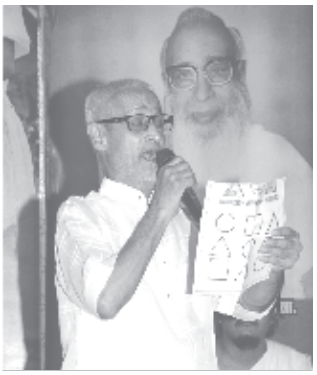

बीकानेर में सम्पन्न हुए मेगा एग्जिबिशन की झलकियाँ

तिरुपात्तुर में आराधनामय चातुर्मास की बहार

तिरुपात्तुर। जिनदत्त कुशल आराधना भवन के प्रांगण में जैन श्रीसंघ के तत्वावधान में गुप्त परिवार आयोजित चातुर्मास दौरान प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तीनी प. पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्यायें प.पू. प्रियंवदाश्रीजी म.सा., प.पू. शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 की निश्रा में चातुर्मास की आराधना हर्षोल्लास के साथ चल रही है। प्रतिदिन प्रवचन में श्रावक जीवन के 36 कर्तव्य और अमरकुमार-सुरसंदरी चरित्र का तात्विक और मार्मिक विश्लेषण किया जा रहा है।

प्रतिदिन प्रात: भक्तामर, दादा गुरु इकतीसा आदि का आयोजन होता है। दोपहर में जीवविचार आदि तत्वज्ञान की कक्षा होती है। सांय को पाठशाला के बच्चों की प्रतिक्रमण सूत्रों का श्रवण अर्थ आदि की कक्षा भी होती है। शनिवार-रविवार को महिलाओं और बच्चों का शिवीर के माध्यम से संस्कारों का सिंचन किया जा रहा है।

सांस्कष्टतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत पुणिया श्रावक की सामायिक, राजुल -विरह, अमावस को चांद उगाया आदि नाटिका मंचन की प्रस्तुति स्थानीय कलाकारों द्वारा की गयी। नाटिका मंचन की प्रस्तुति गुन्टुर से पधारे श्रावक प्रवर रमेश भाई पोरवाल द्वारा करवायी गई। इसके साथ ही माता-पिता वंदनावली कल्पेश भाई शाह मुम्बई द्वारा करवाई गई। भगवान महावीर के 27 भव का विश्लेषण जिनशासन रत्न बंधुबेलड़ी मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा चैन्नई द्वारा किया गया। साथ ही गिरनार तीर्थ की भावयात्रा का आयोजन भी किया गया।

प.पू. योगांजनाश्रीजी म.सा. की 46वीं वर्धमान तप की ओली की पूर्णाहूति के साथ सावन की झड़ी में तपस्या की लड़ी में तपस्वी रत्न सुश्रावक श्री धर्मचंदजीसा कवाड़ द्वारा मासक्षमण (31 उपवास) की तपस्या की गई और तपस्या की लड़ी में 14 पूर्व तप की आराधना में 35 आराधकों ने की। 11 वर्ष के मेहुल और निमेष कवाड़ द्वारा 9 उपवास की तपस्या की गई और 8 उपवास की तपस्या में लक्ष्मण, सुहानी, पूरण, सुषमा कवाड़, मोहित गुलेच्छा एवं 5 उपवास की तपस्या महेन्द्र कवाड़ आदि द्वारा की गई।

शंखेश्वर तीर्थ आराधनार्थ तेले एवं सांकली आयंबिल की तपस्या और स्तंभन पार्श्वनाथ का जाप भी निरंतर चल रहा है। तप वंदनावली का आयोजन तप अनुमोदनार्थ साध्वीजी के द्वारा किया गया। भक्ति की रमझट जमाने मालपुरा से राजीव विजयवर्गीय एवं हैदराबाद से संयम नाबेड़ा पधारे। कार्यक्रम का संचालन ललित कवाड़ ने किया।

प्रेषिका- आर. सुषमा कवाड़

चूले चेन्नई में बरड़िया परिवार में तपस्या की लहर

पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी पद विभूषिता परम पूज्या गुरुवर्या सुलोचना श्रीजी म.सा., प.पू. तपोरत्ना सुलक्षणा श्रीजी म.सा. एवं हमारी कुल दीपिका प.पू. प्रियविनयांजना श्रीजी म.सा. प्रियमंत्रांजना श्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से हमारे परिवार में महावीरचन्द एवं उनकी धर्मपत्नी श्वेता वरडिया ने 31 उपवास (मासक्षमण) मनोजकुमार एवं उनकी धर्मपत्नी रीटा वरडिया ने 11 उपवास, सौ. अंजु वरडिया ने 11 उपवास, दीक्षित कुमार, जिनेशकुमार लक्षिताकुमारी ने 9 उपवास की तपस्या करके एक नये इतिहास का सर्जन किया है। तपस्या के उपलक्ष में भव्य वरघोड़ा ता. 9-8-2017 को हुआ तत्पश्चात् तपवंदनावली आदिनाथ जैन मंडल मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा ने सुमधुर शैली में करवाई। पंन्यास पद्मचन्द्र विजयजी म.सा. ने फरमाया यह कमलाबाई मदनचंदजी वरडिया का परिवार धन्य है दो-दो पुत्रियां संयम मार्ग पर अग्रसर हुई है, अब तपस्या की बहार आई है। बहुत-बहुत अभिनंदन अनुमोदन है। ता. 10-8-2017 को गुरु भगवंतों के घर पर पगलिये हुए बाद में सभी तपस्वियों का पारणा हुआ। पंच परमेष्ठि पूजा और दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

- बरडिया परिवार

धुलिया नगरे प.पू. महत्तरापद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म.सा. की 29 वी पुण्यतिथि निमित्ते रत्नत्रयी महोत्सव

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिन मणिप्रभसूरिश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या गच्छ गणिनी मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता प.पू. स्नेहसुरभि श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा. (भागु म.सा.) प.पू हर्षपूर्णा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा में श्री शीतलनाथा संस्थान धुलिया के तत्वावधान में ता. 29 अगस्त बुधवार को पुणिया श्रावक की सामायिक का आयोजन ता. 30 गुरूवार को गुरूवर्या श्री के गुणानुवाद एवम नियम संहित 29 लक्की ड्रॉ ता. 1 शुक्रवार को श्री पार्श्वानाथ पंचकल्याणक पूजा निगोद निवारण तपस्वियों की तरह से श्री जगद्गुरू मंडल के द्वारा पढ़ाई गई।

रात्रि में भक्ति की धूम मचाने बाल कलाकार नमन डागा मलकापुर से एवम् तलोदा युवा मंडल के द्वारा 'एक दोस्त जिंदगी बदल दे' नाटिका प्रस्तुत की गई।

ता. 2 शनिवार को जुगराज मदनलालजी मुथा परिवार की ओर से भक्ताम्बर महापूजन श्री संघ के द्वारा साधर्मिक भक्ति का आयोजन रात्रि में प्रभु भक्ति करवाने मुंबई से भरत भाई ओसवाल अपनी टीम के साथ पधारें। ता. 3 रविवार को विनोद भाई मिश्रिमलजी भंसाली परिवार की ओर से 108 जोड़ा सहित दादा गुरुदेव का महापूजन और श्रीसंघ द्वारा साधर्मिक भक्ति का आयोजन एवम् रात्रि भक्ति भावना इत्यादि कार्यक्रम सानंद सोल्लास सम्पन्न हुए। पुण्यतिथि निभित्त गरीबों को अनुकंपा दान वितरण आयोजन भी आयोजित किया गया।

प्रेषक : प्रकाश चौहान

मुंबई में मनाया गया खरतरगच्छ दिवस

मुंबई के पांजरापोल क्षेत्र में स्थित कपोलवाड़ी में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ सांचोर के तत्वावधान में चातुर्मासार्थ बिराजित खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्याएं विदुषी आर्या रत्ना सम्यग्दर्शना श्रीजी म.सा., पू. साध्वी कनकप्रभा श्रीजी म.सा., पू. साध्वी सम्यक्प्रभा श्रीजी म.सा., पू. साध्वी सत्वबोधि श्रीजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में श्रावण सुदी 6 शनिवार दि. 29/7/2017 को खरतरगच्छ दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। खरतरगच्छ की स्थापना लगभग 998 वर्ष पूर्व खरतर बिरुद धारक श्री जिनेश्वरसूरीजी द्वारा की गयी थी।

इस अवसर पर पूज्य गुरुवर्या श्रीजी ने गच्छ के स्वर्णिम इतिहास के बारे में उपस्थित जनसभा को बताते हुए कहा कि खरतरगच्छ समस्त गच्छों में प्राचीनतम गच्छ है। जिस प्रकार इसका स्वर्णिम इतिहास है, उसी प्रकार हमें इसका

स्वर्णिम भविष्य बनाना है, परम उपकारी दादा गुरुदेवों के उपकारों को समझाते हुए गुरुवर्या श्री ने संघ की एकता पर भार दिया।

इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष मांगीलाल श्रीश्रीश्रीमाल, सह सचिव चम्पालाल वाघेला, ललित मुणोत, रमेश मरडिया, विजय जैन, कल्पेश शाह, नरपत बोथरा, जेठमल बोथरा एवं प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल आदि कई वक्ताओं ने अपने उद्‌गार व्यक्त किये, संघ के युवा कलाकारों द्वारा सुंदर नृत्य प्रस्तुत कर जिन शासन का ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम के पश्चात् सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया, जिसमें 100 से अधिक श्रावक श्राविकाओं ने सामायिक का लाभ लिया। इस अवसर पर साधु पद की आराधना सहित एकाशने का भी आयोजन किया गया, जिसमे छोटे बच्चों सहित लगभग 100 से अधिक व्यक्तियों ने लाभ लिया। इसी कड़ी में रविवार को साधु जीवन की कठिनता एवं महत्ता को प्रकाशित करता 'चारित्र वन्दनावली' का विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें चेन्नई से विशेष रूप से पधारे सुविख्यात बंधू बेलडी शासन रत्न सुश्रावक श्री मनोज जी एवं मोहन जी गुलेच्छा ने अपनी भाववाही प्रस्तुति से उपस्थित जन समुदाय को भाव विभोर कर दिया।

श्री मणिधारी युवा परिषद् मुंबई द्वारा गुरुदेव महापूजन का आयोजन

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में श्री मणिधारी युवा परिषद् मुंबई द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी महाचमत्कारी दादा गुरुदेव के महापूजन का भव्य आयोजन मुंबई के कपोलवाडी में किया गया प.पू. गुरुवर्या साध्वी रत्ना श्री सम्यगदर्शना श्रीजी म.सा. की शुभ निश्रा में आयोजित इस कार्यक्रम में कोकिल कंठी साध्वीजी श्री सम्यकप्रभा श्रीजी म.सा. ने अपनी सुमधुर वाणी से गुरुदेव का पूजन पढ़ाते हुए उपस्थि सभी महानुभावों को भावविभोर कर दिया। गुरुवर्या श्रीजी ने अपने मुखारविंद से प्रभावशाली मंत्रोच्चार करते हुए एक एक मंत्र का अर्थ भी समझाया, अपने सुरीले स्वर में दादा गुरुदेव के भजनों से समूचा पांडाल झूम उठा इस अवसर पर महापूजन का महत्व समझाते हुए गुरुवर्या श्री सम्यगदर्शना श्रीजी म.सा. ने कहा कि प्रत्येक कार्य में श्रद्धा होनी आवश्यक है, यदि हम सच्चे मन से गुरुदेव को पूजते हैं, पूरी श्रद्धा से गुरुदेव को याद करते हैं तो हमारी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है, साथ ही हमारे परम उपकारी चारों दादा गुरुदेवो के जीवन चरित्र को संक्षेप में बताया साध्वी श्रीजी ने फरमाया की विधि विधान युक्त किया गया पूजन अवश्य ही फलदायी होता है 54 जोड़ों सहित हुए इस महापूजन में सैंकडो गुरुभक्तों ने लाभ लिया।

इस अवसर पर लाडले विधायक एवं राजनेता श्री मंगल प्रभात जी लोढ़ा, सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती मंजुजी लोढ़ा, श्री वर्धमान जैन परिषद् के अध्यक्ष श्री पवनजी मेहता, श्री जैन श्वे, खरतरगच्छ संघ सांचोर के उपाध्यक्ष श्री जगदीशजी बोथरा, महामन्त्री श्री चुन्नीलालजी मरडीया, वर्तमान चातुर्मास समिति के संयोजक एवं मुंबई खरतरगच्छ संघ से भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मांगीलाल जी श्रीश्रीश्रीमाल, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रिय सचिव एवं मुंबई खरतरगच्छ संघ के सचिव श्री प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल के युप के प्रचार प्रसार समिति के राष्ट्रिय संयोजक श्री धनपतजी कानुंगो, राष्ट्रिय सह कोषाध्यक्ष श्री राजेशजी छाजेड़ के-युप मुंबई शाखा के अध्यक्ष श्री चम्पालालजी वाघेला, महावीर इंटरनेशनल के श्री शांतिलालजी कोचर सहित कई गणमान्य महानुभावो का पदार्पण हुआ।

मंच संचालन परिषद् के संस्थापक अध्यक्ष चम्पालाल वाघेला ने किया स्वामीवात्सल्य का लाभ बाड़मेर निवासी शासन रत्न श्री भंवरलालजी विरदीचंदजी छाजेड़ परिवार ने लिया था। कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष पवन श्रीश्रीश्रीमाल ने पधारे हुए सभी महानुभावों की अनुमोदना करते हुए आभार प्रकट किया।

धनपत कानुंगो,मुंबई

पाली नगर में खरतरगच्छ क्रिया भवन मे पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ एवं प.पू. महत्तरापद विभूषिता श्री चम्पा श्रीजी म.सा. की 29 वीं पुण्य तिथी सान्नद संपन्न

प.पू. वर्तमान खरतरगच्छाधिपति आ.भ.श्री जिन मणिप्रभसूरिश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी चम्पा-जितेन्द्र-ज्योति प.पू. धवल यशस्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या प.पू. श्री विश्वरत्ना श्रीजी म.सा. प. पू. श्री मयूर प्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में भाद्रपक्ष वदि 11 ता. 18.8.2017 शुक्रवार को पार्वाधिराज पर्युषण की आराधना प्रारंभ हुई। पर्युषण प्रारंभ के दो दिन अष्टान्हिका प्रवचन हुआ।

कल्पसूत्र घर ले जाने का व वोहराने का लाभ महावीर जी हाला वाला (विनायक फेब्रिक्स) ने लिया। पांच ज्ञान पूजा का अच्छा उल्लास रहा। रात्रि में भक्ति जागरण हुआ। तीसरे दिन प्रात: 9.15 बजे से कल्पसूत्र वांचन प्रारंभ हुआ। दोपहर में नदावर्त गहुंली प्रतियोगिता हुई। चौथे दिन प्रात: 9 बजे कल्पसूत्र वांचन पश्चात् 14 सपना के कार्यक्रम के मुनिम जी, तिलक, माला 14 सपना उतारने की बोलिया हुई व दोपहर में 2.30 बजे दादा गुरुदेव के सामुहिक इकतीसे का पाठ हुआ। पांचवे दिन ता. 22.8.2017 प्रात: 9 बजे कल्पसूत्र वांचन फिर प्रभु महावीर के जन्म वांचन हेतु 14 सपना जी का अवतरण व सपनाजी एवं पालना जी घर ले जाने की बोलिया हुई और पालनाजी घर से सजा कर लाने की प्रतियोगिता हुई। सभी के आनन्द उत्साह के साथ भगवान महावीर का जन्म वांचन किया। जन्म वांचन होते हुए ही सभी नाचने झूमने लगे। बाजे-शहनाई वादन से जन्मोत्सव को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया। रात्रि में बहुत जोरदार जन्मोत्सव की भक्ति का आयोजन हुआ। छठे दिन कल्पसूत्र वांचन व तपस्वियों का बहुमान करने बोली एवं दोपहर में नवकार प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, सातवे दिन प्रात: 9 बजे कल्पसूत्र वांचन पश्चात् बारसा सूत्र वोहराने, दर्शन व ज्ञान की बोली हुई एवं अठाई, छठ अठ्म् आदि विविध तपस्वियों का बहुमान हुआ। शाम को 7 बजे श्री संपतराज जी रावतमल जी बोथरा ने कुमारपाल महाराजा बनकर 108 दीपक से महाआरती की एवं आरती प्रतियोगिता सभी अपने-अपने घर से आरती सजाकर लाये। आठवां दिन संवत्सरी महावर्व प्रात: 6 बजे काफी संख्या में श्रावक श्राविकाओं ने पौषध व्रत लिया पश्चात् चैत्य परिपाठी करके प्रात: 9:15 बजे मूल सूत्र वोहराने के बाद ज्ञान पूजा आदि हुई। प.पू साध्वी श्री विश्वरत्ना जी म.सा. ने खड़े-खड़े कंठस्थ बारसा सूत्र का वांचन किया। शुद्ध उच्चारण स्पष्ट वाणी से 1:30 घंटे में 1200 सूत्र वांचन किया। पू. गुरूवर्या श्री ने सकल संघ से क्षमायाचना प.पू. मयूर प्रिया श्रीजी म.सा. ने क्षमा भाव जीवन में कैसे आये, क्रोध पर किस प्रकार विजय प्राप्त करना व सांवत्सरिक महापर्व की महिमा बताई। प्रवचन पश्चात् 4 बजे पुरुषों एवं महिलाओं का अलग-अलग प्रतिक्रमण लोढ़ा बास के खरतरगच्छ क्रियाभवन में प्रारम्भ हुआ। अत्यन्त अहो-आपों के साथ एकाग्रता पूर्वक शांति से सबने सांवत्सरिक प्रतिक्रमण किया। अगले दिन 8.10 व छठ अठ्म से ऊपर सभी तपस्वियों के सामुहिक पारणे का लाभ गुरुभाक्त मंडल ने लिया।

ता. 29.8.2017 भाद्रवा सुदी 8 को प.पू. महत्तरापद विभुषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 29 वीं पुण्य तिथी निमित्ते त्रीदिवसीय महोत्सव का शुभारंभ हुआ। प्रथम दिवस ता. 29.8.2017 को प्रात: 9.30 बजे नवकार उपाध्याय व

साधु के वर्णानुसार ड्रेस व एकासणा का आयोजन हुआ, उसमें सैकड़ो श्रद्धालुओं ने भाग लिया इस आयोजन के लाभार्थी श्री खरतरगच्छ बाड़मेर युवा परिषद था।

द्वितीय दिवस ता. 30.8.2017 को प्रातः 9.30 बजे प.पू. महत्तरा पद विभुषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ, सर्वप्रथम द्वीप प्रज्वलित करने का चढ़ावा सामायिक से, माल्यार्पण करने का नवकार महामंत्र की माला से व वासक्षेप पूजा करने का मौन द्वारा हुआ।संपतराज जी संकलेचा कान्तिलाल जी बलाई, राजेश जी गड़ावत, संपतराज जी भंसाली ने गुरुवर्या श्री को श्रद्धांजली अर्पण की। रिंकु मालू सीमा धारीवाल ने गुरु भक्ति प्रस्तुत किया। साध्वी श्री संयमलता श्रीजी म.सा., चारित्र प्रियश्रीजी म.सा. मयूर प्रियाश्रीजी म.सा. व साध्वी श्री विश्वरत्ना श्रीजी म.सा. ने पूज्याश्री के जीवन पर प्रकाश डाला। सामूहिक सामायिक व आयाम्बिल का आयोजन एवं 29 वीं पुण्य तिथि निभिते 29 लक्की ड्रॉ निकाले गये। सामूहिक आयाम्बिल का लाभ सोहनलाल जी अनिल जी सेठिया परिवार ने लिया। तृतीय दिवस 31.8.2017 को पाली नगर में प्रथम बार अष्टापद जी तीर्थ की भाव यात्रा का आयोजन प्रातः 9.00 बजे केसरियानाथ जी मंदिन से संघ बैण्ड बाजों की मधुर ध्वनियों के साथ लोढा बास खरतरगच्छ क्रिया भवन पहुँचा। खरतरगच्छ युवा परिषद बाड़मेर द्वारा उद्घाटन व प.पू. साध्वी श्री मयूर प्रियाश्रीजी म.सा. ने श्री अष्टापद् तीर्थ की अपनी अमृतमयी वाणी द्वारा भावयात्रा करवाते हुए तीर्थ की महिमा का वर्णन किया। 3 घंटे के कार्यक्रम दरम्यान एक भी व्यक्ति हिला नहीं। सम्पूर्ण हॉल खचा खच भरा हुआ था। भाव यात्रा के पश्चात् बाड़मेर खरतरगच्छ युवा परिषद् स्वामी भक्ति का आयोजन हुआ। सभी की जिव्हा पर एक ही बात थी की ऐसा कार्यक्रम हमने अपने जीवन में पहली बार देखा।

बाछड़ाऊ नगर में निकला वरघोड़ा

बाछड़ाऊ। बाछड़ाऊ नगर में पर्युषण महापर्व को लेकर साध्वी अनन्तदर्शना श्रीजी म.सा. की निश्रा में चल रही तपस्या के निमिते शनिवार को भव्य वरघोडा निकाला गया। तपस्या करने वाले की अनुमोदना में तपस्वीयों को रथ में बिठाया गया। बाछड़ाऊ जैन श्री संघ के अध्यक्ष प्रकाश मालू ने बताया कि बाछड़ाऊ में प्रथम बार हुए चार्तुमास के दौरान पर्युषण पर्व में तपस्या को लेकर युवाओं में खासा उत्साह रहा है युवाओं की ओर से 5.8.2017 उपवास के साथ साथ मासक्षमण (30 उपवास) व सिद्धी तप सहित कई जैन धर्म की तपस्याओं का ठाठ रहा। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर जैन समाज की ओर से पहली बार भव्य वरघोडा निकाला गया जिसमें डीसा से आये बैण्ड ने, घोडे, ऊट पर जैन पताका लिए समाज के लोग, तपस्वी रथो पर सवार होकर निकले तो उसे हर कोई निहार रहा था। मालू ने बताया कि वरघोडा बाछड़ाऊ के मुख्य मार्गो से होते हुए धर्मसभा स्थल पहुंचा जहाँ धर्मसभा में परिर्वतित हो गया। इस अवसर पर साध्वी अनंतदर्शना श्रीजी म.सा. ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए तपस्या की महता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज का युवा धर्म के प्रति समर्पित हो रहा है, एक छोटे से गांव में इतनी बडी ओर कठिन तपस्या इस बात का पुख्ता प्रमाण है। उन्होने कहा कि बाछड़ाऊ जैसे छोटे से गांव में इतनी तपस्या देखकर लगता की आधुनिकता हम पर हावी नही हो सकती। उन्होने युवाओं के उत्साह की अनुमोदना करते हुए कहा पर्युषण पर्व पर हमारी ओर से गांव को विनती की गई थी इस महापर्व में चप्पल का त्याग करेंगे नतीजा पूरे गांव ने आठ दिन तक चप्पल का त्याग किया इसके लिए श्री संघ का आभार। जैन श्री संघ के विनित मालू के बताया कि इसके बाद शुभ मूहुर्त में निरआहार रहे तपस्वीयों का पारणा कराते हुए जैन श्री संघ ने उन्हे आहार ग्रहण कराया। उसके बाद श्री संघ की ओर से स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया। वरघोडे में बाड़मेर जिले के साथ साथ राजस्थान के कई हिस्सो से लोगो ने शिरकत की। अन्त में संघ के अध्यक्ष ने सभी का आभार जताया संवत्सरी महापर्व में वर्ष पर्यन्त हुए भुलो की क्षमा याचना की। इस अवसर पर जगदीशचन्द बोथरा, एडवोकेट मुकेश जैन, बाबुलाल छाजेड, महावीर गोलेच्छा, शंकरलाल मालू, शंकरलाल भंसाली, बंशीधर मालू, बाबुलाल धारीवाल, बाबुलाल संखलेचा, ओमसा गांधी, कपिल मालू, स्वरूप भंसाली, संजय धारीवाल सहित कई लोग उपस्थिति थे।

प्रकाश मालू, अध्यक्ष जैन श्री संघ बाछड़ाऊ

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर की पत्नी बहुत उदास थी। पति के पूछने पर उसने अपना दुखडा सुनाते हुए कहा– पडौसी के सामने मेरा मुँह लटक जाता है। मैं अपने आप में बहुत गरीब महसूस करती हूँ। पडौस के लोग 5000 रूपये के भाडे के मकान में रहते हैं।

और जब मुझे पूछा जाता है कि आप मकान का क्या भाडा देते हैं?तो मैं जवाब नहीं दे पाती। बार बार पूछने पर मुझे बताना पडता है कि हम महिने का 3000 रूपये देते हैं। तब मेरा सिर शर्म से झुक जाता है।

आप कुछ करो ताकि मेरा सिर गर्व से ऊँचा हो सके।

जटाशंकर बोला– यह कितनी अच्छी बात है कि वैसे ही मकान का किराया वे लोग 5000 रूपये दे रहे हैं जबकि हम मात्र 3000 रूपये!

उसकी पत्नी ने कहा– मुझे कुछ नहीं पता। आपको कोई न कोई उपाय करना ही होगा।

पांचवें दिन जटाशंकर प्रसन्नता से भर कर आया और अपनी पत्नी को बधाई देते हुए कहा– बधाई हो! सेठ ने मेरी बात मान ली। और आज उन्होंने इस घर का भाडा तीन हजार से 5000 कर दिया।

बहुत मुश्किल से माने थे। मुझे बहुत आजीजी करनी पडी। वे कह रहे थे कि मैंने वादा किया था तुमसे कि साल भर तक किराया नहीं बढाऊँगा! मैं वादे से मुकर नहीं सकता।

उन्हें बहुत समझाना पडा तब कहीं जाकर उन्होंने भाडा बढाया। अब तो तुम प्रसन्न हो।

पत्नी का चेहरा खिल उठा। उसने तय किया कि आज शाम को ही पडौसियों के घर घूम घूम कर घोषणा करूँगी कि हम भी 5 हजार रूपये किराये वाले मकान में रहते हैं।

व्यक्ति अपने अहंकार का पोषण करने के लिये नुकसान उठाने के लिये भी तैयार हो जाता है। नुकसान उठाकर भी प्रसन्न होता है। यह वैचारिक विकृति की पराकाष्ठा है।

सीमंधर स्वामी जैन मंदिर दादाबाड़ी में 31 दिवसीय इकतीसा जाप समापन समारोह

दिनांक 16 जुलाई से 31 दिवसीय इक्तीसा जाप का श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर दादाबाड़ी में प्रारंभ हुआ था। जिसका भव्य समापन राजनांदगांव महासमुंद के प्रसिद्ध जैन भजन गायक श्री राहुल झाबक व देवराज लूनिया के सुमधुर भक्ति रस से सराबोर भजनों के साथ सैकड़ों भक्तों की उपस्थिति में सानन्द सम्पन्न हुआ। उपरोक्त जानकारी अध्यक्ष संतोष बैद व सचिव महेन्द्र कोचर ने देते हुए बताया कि प्रातः 10 बजे दादा गुरूदेव की बड़ी पूजा से समापन समारोह का प्रारंभ हुआ ।

बीकानेर चातुर्मास की झलकियाँ

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

श्री बीकानेर नगर की धन्यधरा पर

ऐतिहासिक अति प्राचीन

श्री चिंतामणि आदिनाथ जिनालय, श्री भांडासर सुमतिनाथ जिनालय, श्री कुन्थुनाथ जिनालय में

अनेक जिन बिम्ब एवं सात ध्वजदंड प्रतिष्ठा प्रसंगे

त्रिदिवसीय महोत्सव

सकल श्री संघ का भावभरा आमंत्रण

प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त्त

11 अक्टूबर 2017 कार्तिक वदि 6 बुधवार प्रातः 8 बजे

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
आदि ठाणा

पावन सानिध्य

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रिय श्रद्धांजनाश्रीजी म.
आदि ठाणा

मार्गदर्शन

शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी बाबूमलजी हरण
सिरोही निवासी

इस पावन प्रसंग पर पधारने का सकल श्री संघ को हार्दिक निमंत्रण / निवेदन है।

आयोजक : श्री चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास, बीकानेर

निवेदक : श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ ,बीकानेर

व्यवस्था सहयोगी : अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद्, बीकानेर शाखा

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, स्त्रिगणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408